Raghav Vs Madhav

By

Manjusha Halkare

Title: Raghav Vs Madhav
Author Name: Manjusha Halkare
Published By: Bhabad International Publication
Publisher Address: At Post Kasari, Tal Nandgaon, Dist Nashik, 423106
Printer Address: Minaxi Enterprise, Andheri, Mumbai
Copyrights @ Manjusha Halkare

।।श्री राम समर्थ।।

Raghav Vs Madhav यह पुस्तक मैंने लिखी है यह कहना ठीक नहीं क्योंकि लिखाने वाले ही वे है। बचपन से ही अपने माता व पिता के साथ आध्यात्मिक धारावाहिक जैसे रामायण और महाभारत विष्णु पुराण देखने व आध्यात्मिक प्रवचन सुनने में मुझे आकर्षण रहा है। लेकिन जब पुस्तक लिखने के लिए विषय की बात आई तो मुझे उलझन है और मेरी यह उलझन मेरे भाभी व भाई लेखक मितेश वेरुलकर ने सुलझाईयी और सच कहो तो शुरू से लेकर अंत तक उनके मार्गदर्शन में यह पुस्तक लिखी गई है, वे मार्गदर्शक होने के साथ-साथ मेरे प्रेरणा स्रोत भी हैं। मेरे एक और प्रेरणा स्रोत भाई मंगेश वेरुलकर ने यह पुस्तक लिखते समय मेरा हर समय प्रोत्साहन बढ़ाया। यह पुस्तक लिखने में हमारे भारत देश के आध्यात्मिक रचनाकार सूरदास से लेकर आधुनिक रचनाकार सुरेंद्र शर्मा की रचना की तथा पति प्रवीण हलकरें व परिवार की मुझे सहायता मिली है। इन सभी का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करती हूं।

अनुक्रम

1 स्वीकृति एक कला

2 असंख्य महिमा

3 शैशव स्वरूप

4 चित् चोर

5 प्रेम के दो पहलू - एक सीता एक राधा

6 अनूठा प्रेम

7 भक्ति एक उपहार

8 विनम्रता के स्वामी

9 तुम चंदन हम पानी

10 एक इशारा

11 अद्‌भुत शत्रु

12 एक और महाभारत

13 है उत्तर ?

14 जीवन संज्ञा

1 स्वीकृति की कला

रघुपति **राघव** राजाराम पतित पावन सीताराम !

राम वह नाम है जो हम भारतीय अभिवादन से लेकर अंतिम यात्रा तक लेते है। हम मिलते है तो राम राम कहते है और जब हमारी विदाई होती है तो भी हम राम नाम ही करते है। यह नाम हमारी अंदर की भावना का वो कोना छूता है जो दूसरी कोई बात नहीं छूती ।

केशव **माधव** गोपाला !

हे नटनागर गोपाला !

कृष्ण कन्हया गोपाला !

मनमोहना!

कृष्ण वह नाम है जिसमें सबसे ज़्यादा आकर्षण है। ये नाम न केवल आकर्षित करता है बल्कि अपना सा भी लगता है। कृष्ण भारत की पहचान है,भारत का अभिमान है और भारत का ज्ञान है ।

भगवान राम का जीवन एक आदर्श है तो भगवान कृष्ण का जीवन एक उत्सव है।

राम और कृष्ण दोनों ने ही जीवन में जो आया उसे हँसते हँसते स्वीकार किया ।सुख आया सुख का स्वीकार किया। दुःख आया दुःख का स्वीकार किया।

भगवान् राम ने पुत्र के रूप में वनवास ,भाई के रूप में पादुका त्याग, पति के रूप में पत्नी वियोग इन सभी को स्वीकृति दी। उनके जीवन में दुःखों का न कोई ओर था न कोई छोर था। फिर

भी उन्होंने मर्यादा नहीं त्यागी सत्य के पथ पर अटल रहे और अपनी कामनाओं का बली देते रहे।

जहा राज्याभिषेक की गूंज थी शहनाईयों के बीच,अपने अँधेरे कक्ष में दशरथ राम को बुलाते है और कहते है ," सुबह तुम्हारा राज्याभिषेक नहीं होगा तुम्हे वनवास के लिए जाना होगा।" और जब ये समाचार अंतपुर तक पहुँचता है तो माता कौसल्या राम को बुलाती है और पूछती है की मंगल ध्वनिया बंद क्यों हुई ? सुबह तुम्हारा राज्याभिषेक है तो ,राज्याभिषेक तक शहनाइयाँ अविरत बजनी थी, वो अचानक बंद क्यों हुई ? तो राम ने ,पृथ्वी का जिसे सिंघासन मिलना था माँ से सहज भाव से कहा की," माता ! पिताजी ने तो मुझे वन का राज्य दे दिया जहा प्रारब्ध के सभी बड़े काम मेरी प्रतीक्षा कर रहे है। " और वनवास का सहज स्वीकार किया इस अन्याय का प्रतिकार भी नहीं किया। दे दिया वचन तो पूरा करना ही है। 'रघुकुल रीत सदा चली आयी प्राण जाये पर वचन ना जाये' उन्होंने अपने आपको समर्पित कर दिया ,सही और गलत क बात भी नहीं उठाई |

भगवन श्रीकृष्ण ने जीवन को आल्हाद से स्वीकारा। वे धारणा शुन्य होकर जिए। लोगों ने चोर कहा उन्होंने स्वीकारा, छलियाँ कहा उन्हें बुरा नहीं लगा, उन्हें रणछोड़ कहा उन्होंने उसे भी स्वीकारा। अपने जीवन में कृष्णा को कितनी जगह मजबूरन छोड़नी पड़ी, गोकुल से वृन्दावन, वृन्दावन से मथुरा, मथुरा से द्वारका | जगह के साथ साथ अपने प्यारों को भी छोड़ना पड़ा। सिर्फ मुस्कराते हुए उन्होंने सब को विदा दी, मानो वे अपने जीवन से सन्देश दे रहे है की 'जो है ठीक है जैसा भी हो वो सब ठीक है, जीवन जहा ले जाये वही मंजिल है। बुरा भी ठीक है अपनी जगह, वह भी चाहिए उसके बिना जीवन नीरस हो जाएगा । काटे भी चाहिए ,कांटों के बिना फूल इतने सुंदर ना लगेंगे| सिर्फ फूल ही फूल रह जाएंगे तो बेस्वाद हो जाएंगे। जीवन में जो संगीत है वह विपरीत सुरों के बीच सामंजस्य है।'

राम व कृष्ण दोनों के जीवन में दुःख की बदलियां घिरी परन्तु दुःख के बादलों को सुख के बादलों में बदलने की कला वो जानते थे। भगवन कृष्ण का कहना था 'जिसे सब स्वीकार है उसे हम कभी नर्क नहीं भेज सकते क्योंकी उसे नर्क भी स्वीकार होगा और जिसे नर्क स्वीकार है वह नर्क को भी अपनी कला से स्वर्ग में बदल ही लेगा। इसके विपरीत जिसे स्वीकृति की कला नहीं आती उसे स्वर्ग भी भेजा जाये तो वहां से भी शिकायत ढूंढा लेगा और स्वर्ग को भी नर्क बना देगा।

मीरा ने जहर का अमृत के तरह स्वीकार किया तो जहर भी अमृत हो गया। हम जैसे जगत को स्वीकार करते है जगत वैसा ही हो जाता है। ये जगत अपनी स्वीकृति से निर्मित है। यह जगत हमारी दृष्टि का फैलाव है।

सीखना आना चाहिए, जिसे सीखना आता है उसे चारों तरफ से शिक्षा मिलती है, जिसे ना सिखाना हो वे राम और कृष्ण के पास से भी खाली लौट जाते हैं।

पूरी राम की कहानी में जो अलग-अलग पात्र है उनकी व्यक्तिगत उपस्थिति भी उस कहानी को मनुष्यता के उस स्तर पर ले जाती है जहां देवत्व भी एक हाथ दूर रह जाते हैं। इस पृथ्वी पर मनुष्य की यात्रा पशुत्व से प्रारंभ हुई है और देवत्व तक जाने का उसका अभीष्ट है। राम कथा उसका एक पाथेय है।

कहते है, वाल्मीकि ने राम होने के पहले ही रामायण लिखी ।अब जब लिख ही दी थी तो राम को भी पूरा करना पड़ा। जब बाल्मीकि जैसे व्यक्ति लिखते हैं तो प्रभु को भी उसे पूरा करना ही पड़ता है। एक दिन अचानक नारद का जंगल से गुज़रना हुआ ,उस जंगल से जहा वाल्या भिल राहगीरों को लुटता था। नारद को भी लूटने की मनशा से रोका और कहा ,'जो भी तुम्हारे पास है सब रख दो।' बहुत लोगों को रोकता था, उसने अपने जीवन में

वही काम किया था उसके रोकने से लोग डर जाते, थरथर कांपते उसके नाम से ही लोगों की छाती दहल जाती। लोग उसके सामने गिड़गिड़ाने लगते हाथ पैर जोड़ने लगते जो पास होता सब दे देते थे। किंतु नारद ना डरे ना गिड़गिड़ाए ना भागे, नारद तो गीत गाते ही रहे अपनी वीणा बजाते ही रहे। वाल्या ने कहा, ' क्यों समझे नहीं क्या? जो भी तुम्हारे पास है सब दे दो। नारद ने कहा ,'मेरे पास तो बहुत कुछ है ,मगर तुम ले सकोगे? मेरे पास तो राम है, लेने की तैयारी है तुम्हारी? मैं तो ढूंढता ही फिरता हूं जो राम को लेने के लिए तत्पर हो। मैं जंगलों में भी उन्हीं की तलाश में घूमता हूं जो लेने के लिए राज़ी हो। तू लेने के लिए राज़ी है ?" वाल्या ने तो इस धन का नाम ही नहीं सुना था। ना कोई पहचान थी ना कोई परिचय था। पूछा कि, 'कौन सा धन है यह राम ? मैंने कभी इसके पहले सुना नहीं ,क्या है यह? नारद ने कहा, 'वह धन मेरे पास है और अब एक ही इच्छा है की कितनों को बाटू ,कितना बाटू। यह अपूर्व धनराशि जितना बांटो, बटती चली जाती है। तुम आसानी से लूट ना सकोगे और मैं तुझे सावधान करता हूं । मुझे लूटने चलोगे तो खुद लूट जाओगे। मुझे तो तुम पर दया आती है। वाल्या ने कहा ," क्या करना होगा लेने के लिए? " नारद ने कहा कि पहले एक उत्तर दें कि, " ये पाप तुम क्यों करते हो?" वाल्या ने उत्तर दिया "यह मैं अपने परिवार के लिए करता हूं " नारद ने एक और प्रश्न किया ," यह जो तुम पाप करते हो, इसमें क्या तुम्हारा परिवार तुम्हारे पापों का फल भोगने के लिए तैयार है? बाल्या हंसा उसने कहा "मुझे धोखा देते हो? इधर में घर जाऊंगा पूछने तुम उधर भाग जाओगे" नारद ने कहा ,"तो फिर तुम मुझे वृक्ष से बांधकर जाओ "।नारद को बांधकर वह घर गया। माता से पूछा ,पिता से पूछा, पत्नी ने भी इंकार कर दिया और बेटों ने भी इंकार कर दिया सबकी इंकार सुनकर वाल्या को हैरानी हुई उसकी आंखें खुल गईं। वापस लौटा और नारद से कहा मुझे क्षमा करें मैं भूल में था। कोई भी मेरे पाप के भागीदार नहीं है तो अब मैं क्या करूं मुझे कुछ बताएं ,मुझे तो शास्त्र भी पढ़ना नहीं आता ।नारद ने कहा" तो सुन !यह जो शब्द है राम

,यह तेरे ह्रदय में ,तेरे सांसों में यूं ओतप्रोत हो जाए कि जागे तो जागे ,सोए तो सोए मगर अहर्निश राम की धारा तेरे भीतर चलती रहे। तेरे ह्रदय की धड़कन राम का ही गीत बन जाए। तेरी सांस सांस में राम ही बस जाए।तू चुप भी रहे तो तेरे भीतर अखंड नाद बजता ही रहे तब तू जीवन की परम संपदा को पाएगा। " यह सुनकर वाल्या अभिभूत हो गया। लेकिन भूल वश वह राम राम की जगह मरा मरा का जप करने लगा। यही जप करते हुए तपस्या में लीन हो गया ।इसी तपस्या के फल स्वरुप वह लुटेरा - हत्यारा वाल्या से वाल्मीकि बन गया और रामायण की महान रचना की।

साधी सरल प्रार्थना भी ईश्वर तक पहुंचने के लिए पर्याप्त है।

ऐसी ही साधी व सरल प्रार्थना करने वाली तीन संतों की कहानी मुझे याद आती है

एक झील के बीच एक छोटा सा टापू था। उस टापू में एक पेड़ के नीचे तीन बूढ़े आकर रहने लगे। गांव वालों का कहना था कि वे संत है। यह बात झील के उस पार रहने वाले एक चर्चा के बिशप को पता चली क्योंकि उसके नियमित प्रवचनों में आने वाले लोग की संख्या धीरे धीरे कम होने लगी थी। अधिकतर लोग उन तीनों के पास जाते थे, इसलिए बिशप को बहुत बेचैनी होती थी। एक दिन वह क्रोधित हो गया, उसने फैसला किया कि वह आज उन तीनों की अच्छी खबर लेगा। वह नाव में बैठकर टापू की ओर गया।

वे बहुत साधारण अनपढ़ और देहातियों जैसे थे। उन तीनों को देखकर वह जोरों से बोला, "तुम्हें संत किसने बनाया?" वे तीनों एक दूसरे की ओर देखने लगे। इनमें से एक ने कहा "किसी ने नहीं, हम लोग खुद को संत नहीं मानते" ।हम तो केवल साधारण मनुष्य है"। "तो इतने सारे लोग तुम्हारे पास क्यों आते हैं? क्या तुमको चर्चा की अधिकारिक प्रार्थना आती हैं?", "नहीं हम तो अनपढ़ है!" और वह प्रार्थना बहुत लंबी है," हम उसे याद

नहीं कर सकते!" ,"तो फिर तुम लोग कौन सी प्रार्थना पढ़ते हो?" उन तीनों ने एक दूसरे की ओर देखा "तुम बता दो।" एक ने कहा, "तुम बताओ ना" वे आपस में कहते रहे। बिशप ने कहा "जल्दी बताओ"। वे बोले," दरअसल हम आपके सामने बहुत ही साधारण व्यक्ति हैं। हम लोगों ने खुद ही एक प्रार्थना बनाई है। हमारी प्रार्थना बहुत साधारण है, हमें माफ़ करे! ईश्वर तीन है! हम भी तीन है इसलिए हमारी प्रार्थना है तुम तीन, हम तीन हम पर दया करो। यही हम प्रार्थना करते हैं। " जैसे हमारे तीन देव है ब्रह्मा विष्णु महेश वैसे ही उनके भी तीन देव है जिसे वह ट्रिनिटी कहते हैं। बिशप ज़ोर से हंसने लगा," ये भी कोई प्रार्थना है? ये प्रार्थना ही नहीं है। मैंने ऐसी प्रार्थना कभी नहीं सुनी।" वे बोले," फिर आप हमें सच्ची प्रार्थना करना सीखा दें, हम तो अब तक यही समझते थे कि हमारी प्रार्थना में कोई कमी नहीं है। ईश्वर तीन है, हम तीन है और भला क्या चाहिए? उस की कृपा ही तो चाहिए।" उनके अनुरोध से बिशप ने उन्हें चर्चा की आधिकारिक प्रार्थना बताई और उसे पढ़ने का तरीका भी बताया। प्रार्थना काफी लंबी थी और उसके खत्म होते होते उनमें से एक ने कहा," हम शुरू का भाग भूल गए हैं"। फिर बिशप ने उन्हें दोबारा बताया। फिर वे आखिरी भाग भूल गए। बिशप बहुत झुँझला गया। और बोला ,"तुम लोग किस तरह के आदमी हो? एक छोटी सी प्रार्थना भी याद नहीं कर सकते?"। वे बोले ,"माफ़ करे, लेकिन हम लोग अनपढ़ है और हमारे के लिए इसे याद करना थोड़ा मुश्किल है। इसमें बड़े बड़े शब्द है, कृप्या आप इसे दो तीन बार सुना देंगे तो शायद हम इसे याद कर लेंगे। ठीक है। अब से हम यही प्रार्थना करेंगे। हो सकता है कि हमें इस का कुछ हिस्सा कहना भूल जाये पर हम पूरी कोशीश करेंगे!" बिशप खुश था। उसने मन में सोचा कि अब लोगों को जाकर बताऊँगा कि वे जिन्हें संत कहते हैं उन्हें तो धर्म का कुछ पता ही नहीं। यही सोचते हुए वह नाव में जाकर बैठ गया। नाव चलने लगी और झील में आधे रास्ते पर ही था कि उसे पीछे से तीनों की पुकार सुनाई दी। उसने मुड़कर देखा ,वे तीनों पानी पर भागते हुए नाव

की तरफ आ रहे थे। उसे अपनी आंखो में यकीन नहीं हुआ। वे लोग पानी में भागते हुए आए और उसके पास पानी पर खड़े हुए बोले " माफ़ कीजिए !हमने आपको कष्ट दिया, कृपया चर्चा की प्रार्थना एक बार और दोहरा दें। हम कुछ भूल गए हैं" बिशप आश्चर्य चकित हो गया। क्योंकि सिर्फ़ जीजस ही पानी पर चल सकते हैं। वो समझ गया, उसने कहा तुम अपनी प्रार्थना ही पढ़ो, मुझे माफ़ करो, मैंने जो कुछ भी बताया उसे भूल जाना। मैं तुम्हारी सरलता और पवित्रता को छू भी नहीं सकता। जाओ, लौट जाओ"। लेकिन वे अड़े रहे कहा," नहीं, ऐसा मत करिये। आप इतनी दूर से हमारे लिए आए बस एक बार और दोहरा दें। हम कुछ भूलने लगे है, पर इस बार कोशीश करेंगे कि इसे अच्छे से याद कर लें।" लेकिन बिशप ने कहा ,"नहीं भाइयो। हम तो सिर्फ बाइबल में ही पड़ते हैं कि ईसा मसीह पानी पर चल सकते हैं पर हम भी उस पर शंका करते हैं। आज तुम्हें पानी पर चलते देख कर मुझे ईसा मसीह पर विश्वास हो गया। तुम लोग लौट जाओ, तुम्हारी प्रार्थना संपूर्ण है।

प्रार्थना में शब्द जरूरी नहीं है, शब्दों का महत्व नहीं है। वो तो भाव पर निर्भर करते हैं। भाव होना चाहिए तो प्रार्थना भी सुन ली जाती है। भाव सच्चे हो तो राम- राम की जगह, मरा- मरा भी स्वीकार हो जाता है।

Notes…..

2 असंख्य महिमा

भगवान विष्णु सर्व पाप हारी एवं मनुष्य को मोक्ष प्रदान करने वाले भगवान माने गए हैं। भगवान विष्णु ने अनेक अवतार धारण किए जिसमें सबसे महत्वपूर्ण अवतार माना गया है मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम और लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण का। किंतु एक ही शक्ति के दो रूप हमें विपरीत नजर आते हैं।

त्रेता युग में भगवान विष्णु ने श्री राम रूप में अवतार लिया।

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि में कौशल्या देवी ने दिव्य लक्षणों से सर्वलोकवंदित श्रीराम को जन्म दिया। भगवान राम सूर्यवंशी है उनका जन्म सुबह के बारा बजे हुआ। श्री राम की प्रतिष्ठा मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप है। श्री राम ने मर्यादा के पालन के लिए राज्य, मित्र ,माता-पिता यहां तक की पत्नी का भी साथ छोड़ा। भरत के लिए आदर्श भाई, हनुमान के लिए स्वामी ,प्रजा के लिए नीति कुशल व न्याय प्रिय राजा , सुग्रीव के परम मित्र और सेना को साथ लेकर चलने वाले व्यक्तित्व के रूप में भगवान राम को पहचाना जाता है।

द्वापर युग में भगवान विष्णु ने श्री कृष्ण के रूप में अवतार लिया।

कृष्ण का जन्म भाद्रपद की अष्टमी तिथि की घनघोर अंधेरी आधी रात बारा बजे रोहिणी नक्षत्र में मथुरा के कारागार में हुआ। भगवान श्री कृष्ण इस नश्वर शरीर में आएं और ऐसे आए जिनके आने के पहले ही उनकी मृत्यु की योजनाएं बनी, उनको मारने की योजनाएं बनने लगी। जन्म के कुछ घंटों बाद से ही उन्हें मारने के अलग-अलग प्रयास किए गए। कभी पूतना तो कभी शतकासुर, लेकिन कृष्ण सब से बचकर निकल गए। जो भी उन्हें मारने आता वही मर जाता था। कृष्ण ऐसी जिंदगी है जिस दरवाजे पर मौत बहुत रूपों में आई और हार कर लौट गई। कृष्ण जीवन की तरफ रोज-रोज जीते चले गए और मौत की

धमकी एक दिन समाप्त हो गई। जिन जिन ने चाहा ,जिस जिस तरीके से चाहा कृष्ण की मृत्यु हो जाए वे उस तरीके से असफल हो गए और कृष्ण जीते ही चले गए ।प्रभु को कोई मार नहीं सका।

कृष्ण के जन्म का संयोग अगर हम देखें तो सारी सृष्टि ने उनके जन्म को मनाया। और इस सृष्टि में पहली बार **भय के गर्भ से अभय का जन्म** हुआ था। कृष्ण का जन्म पाप लिए तो जैसे प्रलय का जन्म था। कृष्ण का जन्म, जन्म का समय नहीं था यह एक नए समय का जन्म था ।और देश की परंपरा में नई लय का जन्म था। कृष्ण अपने आप में मनुष्यता के ठाठ है। वे भव्यता में दिव्यता का पाठ है और जितना संसार छोटा है कृष्ण उतने ही विराट है।कृष्ण का जीवन इतने रंगों से और रूपों से भरा हुआ है कि पूरी मानव सभ्यता अलग अलग समय पर पूर्ण रूप को स्वरूपों को जीते आ रही है, उन रंगों को जीते आ रहे हैं। कृष्ण का व्यक्तित्व बहुत अद्भुत और गहरा है और इसकी गहराइयों का कोई हिसाब नहीं है ।मनुष्य ने जितने भी व्यक्तित्व दिए हैं इस पृथ्वी पर शायद ही कोई व्यक्तित्व इसकी गहराई को छूता।

हमने कृष्ण की बाललीला, रासलीला जानी। 'मुरली बजैया रास रचैया'! हमें जानना चाहिए उस कृष्ण को भी जो सत्य की खातिर अपनी संपूर्ण प्रतिज्ञाएं तोड़ कर रण में शस्त्र उठाते हैं।शस्त्र के साथ-साथ उसी युद्ध क्षेत्र में शास्त्र भी उठा लेते हैं और हमें ज्ञान देते हैं कि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। कृष्ण ने असल प्रेम किया था धर्म से और सत्य से। कृष्ण वह है जो अबला की एक पुकार पर दौड़ जाते हैं ,कृष्ण वह है जो असहाय बालक पुनरदत्त के लिए दसुओ से भी भिड़ जाते हैं, कृष्ण वह है जो इंद्र तक को चुनौती देते हैं, कृष्ण वह है जो पांचजन्य का उद्घोष करते हैं , कृष्ण वह है जो मां यशोदा को अपने मुख में ब्रह्मांड के दर्शन करा देते हैं, कृष्ण वह है जो सांदीपनि ऋषि के मृतक पुत्र को यमराज के पास से वापस ले आते हैं ,कृष्ण वह है जो को कूबड़ी कुब्जा को तत्क्षण ठीक कर देते हैं ,कृष्ण वह है जो जयद्रथ वध

के पूर्व अपनी माया से समय से पूर्व सूर्यास्त करके पुनः उसे उदित कर देते हैं, कृष्ण वह है जो उत्तरा के गर्भ में पल रहे पुत्र परीक्षित को पुनः जीवित कर देते हैं,कृष्ण वह है जो अक्रूर उद्धव शिशुपाल अर्जुन तथा धृतराष्ट्र की भरी सभा में विश्वरूप दिखाते हैं, कृष्ण वह है जो गोपियों से लेकर मीरा तक और सुदामा से लेकर सूरदास तक सभी को मोक्ष दिलाते हैं, कृष्ण सिर्फ बाल गोपाल नहीं सिर्फ माखन चोर नहीं वे एक महान योद्धा है ,एक महान रणनीतिकार और योगेश्वर है। कृष्ण निष्काम कर्मयोगी ,आदर्श दार्शनिक स्थितप्रज्ञ और दैवी संपदा से सुसज्जित महान पुरुष है ।श्री कृष्ण चौदह विद्या सोलह आध्यात्मिक और चौसठ सांसारिक कलाओं के स्वामी हैं इसीलिए जग के गुरु जगद्गुरु कहलाते हैं।

Notes…..

3 शैशव रूप

भगवान श्रीराम ने अपने पिता दशरथ और माता कैकई द्वारा 14 वर्ष का वनवास दिए जाने पर उनसे एक भी प्रश्न न करते हुए उनकी आज्ञा का पालन किया और पुत्र धर्म की रीत निभाई।

जिस तरह भगवान राम ने पिता के वचन का सन्मान किया ,उसी तरह श्रीकृष्ण ने भी मां यशोदा के प्रेम का सम्मान कर अपने पुत्र धर्म की रीत बखूबी निभाई ।

कार्तिक मास और शुभ दिवाली का दिवस है। माँ यशोदा सुभह उढ़ाकर कान्हा के लिए माखन निकाल रही है और मन,करम ,वचन तीनो से परमात्मा को याद कर रही है। कहते है की जब कोई मन ,करम,वचन से परमात्मा को याद करता है तो परमात्मा सोते नहीं। बालकृष्ण भी इस वक्त सोये हुए है। माँ यशोदा का मन भगवान् में है, कर्म भी कृष्ण के लिए हो रहा है और वाणी भी उसी के गुण गा रही है ,तो सोते हुए बालकृष्ण भी जग गये। और माँ से कहे ,"माँ भूक लगी है।" माँ दूध पिलाने लगी। भगवान् कृष्णा की लीलाओं का बखान करना मुश्किल है। विराट रूप धरा तो सारी धराहर लोक पर छा गये ,और छोटा रूप धरा तो यशोदा के गोद में भी समां गये। लेकिन उसी वक्त रसोईघर में दूध उबाल खाकर निचे गिरने लगा तो माँ ने झट से कान्हा को गोदी से उतरा और दूध का पात्र उतारने चली गयी। इधर दूध उफन रहा था इधर पूत उफनने लगा। “माँ को पूत से ज्यादा दूध प्यारा है, मुझे छोड़ के चली गयी “ तो क्रोध में कान्हा ने पत्थर उठाकर माखन की मटकी पर दे मारा और मटकी फोड़ दी। जब माँ ने आकर देखा तो पहले हंसने लगी और फिर सोचा की लल्ला ज्यादा बिगड़ गया है उसे तो आज सबक सिखाऊंगी ,उसे मरूंगी, माँ डंडा लेकर कान्हा को मरने के लिए दौड़ी ,आज भगवान् आगे आगे भाग रहे है और माँ पीछे पीछे दौड़ रही है।

बड़े बड़े योगी योग में रहकर जिन्हे पकड़ नही पाते आज माँ उसी को पकड़ने दौड़ी है । इतने में कान्हा का मित्र मनसुखा वाहा आते है ,मां कहती है, " मनसुखा,तू आज कान्हा को पकड़ कर ले आ मैं तुझे माखन खाने को दूंगी "। और माखन के लोभ में मनसुखा ने भी कान्हा को पकड़ लिया। और जोर से आवाज लगायी माँ दौड़ कर आयी। जैसे ही कान्हा के पास पहुंची मनसुखा ने कान्हा को छोड़ दिया और बोले, "मैया मैंने इतनी देर पकड़ कर रखा पर तू नहीं आयी सो कन्हैया हाथ छुड़वाकर भाग गया। मैया, एक तरकीब बताऊ इसे पकड़ने की, तू इसे भक्त की सौगंध दिला " मैया बोली, "इस चोर को कौन भक्त बनेगा?" और फिर भी माँ ने सौगंध दिलवाई "कन्हैया तुझे तेरी भक्त की सौगन्ध अगर तू गोद में न आया तो। " भगवान् बोले "अहम् भक्ता पारधीन " मै तो भक्त के आधीन हु।

और दौड़ कर मैया के पास चले गये और बोले ,"मैया मार या छोड़ अभी मै तेर हाथ में हु। " मैया बोली ,"आज न मारूंगी न छोडूंगी आज तो तुझे दिन भर बांध कर रखूंगी " और रेशम की डोर से कान्हा को बांधने लगी।कान्हा के हाथ पैर छोड़कर पेट को ओखली से बांधने लगी। पेट जहा सारा ब्रह्माण्ड समाया है तो डोरी भी छोटी पड़ने लगी। माँ बार बार बड़ी डोरी लाती वो बार बार छोटी होने लगी। यह देख ओखली पूछती है," क्यों रे डोर! तू बार-बार छोटी क्यों हो जाती है?" तब रस्सी कहती," है अरे ओखली जब स्वयं अनंत कोटि ब्रह्मांड नायक मां के लिए छोटे हो गए तो भला उनके सामने मैं कैसे बड़ी बनी रहूं?" माँ जब बहोत थक गयी और प्रेम में आ गयी तो प्रभु ने माँ पर कृपा कर दी और माँ ने कान्हा को बांध दिया और चली गयी। कृष्ण बंधे पड़े रहे। वो ईश्वर, वो परमात्मा जो सारे चराचर जगत को बंधन से खोलता करता है वो मां की लगाई एक छोटी सी गांठ खोलने में असमर्थ रहे? क्या कारण रहा होगा ?

इस चराचर जगत का परमेश्वर जब पुत्र बनकर आता है तब वह मां के आगे सिर्फ पुत्र होता है ईश्वर नहीं।

4 चित् चोर

भगवान विष्णु को त्रेता युग में ,श्रीराम रूप में धर्म की रक्षा करने हेतु अपने अयोध्या वासियों को छोड़कर वन जाना पड़ा और द्वापर युग में कृष्ण रूप में धर्म की स्थापना करने हेतु गोकुल वासियों को छोड़कर मथुरा जाना पड़ा।

भक्त अपने भगवान के साथ ऐसे सुंदर-सुंदर संबंध जोड़ लेते हैं की ना भक्त भगवान से दूर रह सकते हैं और ना भगवान भक्त से ।

भगवान श्री राम जब पिता की आज्ञा और रघुकुल की रीत निभाने के लिए 14 वर्षों के लिए वनवास जा रहे थे तब सारे अयोध्या वासियों के ह्रदय टूटे जा रहे थे। आयोध्या की प्रजा राम के वनवास से दुखी हो रही थी। राम के प्रेमी राम के पैरों के नीचे की धूल इकट्ठा कर रहे थे। वे ना तो श्रीराम को वन जाने से रोक पा रहे थे ना अपने आंसुओं को। मानो उनकी आंसू भरी आंखें यह कह रहीं हैं,

"धूल भी चरण कि ये, संजोए ना तो क्या करे

छांव जा रही है हमारी ,धूप ठोए ना तो क्या करें

छूट रही है सास ,आस खोऐ ना तो क्या करें

जिनके राम जा रहे हो ,रोए ना तो क्या करें।

भगवान श्री कृष्ण जब गोकुल छोड़कर मथुरा जा रहे थे तब सभी लोग निराश हो रहे थे। गोकुल के सिर्फ लोग ही नहीं यहां तक कि पशु ,पक्षी ,नदी ,रुक्ष सब ही व्याकुल हो रहे थे। कृष्ण हमें छोड़कर चले जाएंगे तो हम उनके बिना कैसे जीवित रहेंगे? क्योंकि कृष्ण इन सब की सांसों की डोर और भटकन की छोर **थे।कृष्ण जैसा व्यक्तित्व, चोरी में भी नाम कमा लेता है** ,वह

ऐसा चोर था जिसने केवल माखन ही नहीं चुराया बल्कि सारे गोकुल वासियों के चित् चुरा लिए थे। सबको रोता देख उद्धव कृष्ण से कहते हैं ,वह उद्धव जिनको अपने ज्ञान पर बहुत अहंकार था,"कृष्ण तुम जाओ -जाओ हमने इन्हें समझा देंगे ,ये हमारी बात मान लेंगे। तो भगवान श्रीकृष्ण मुस्कुराते हैं मानो वे यह कह रहे हैं ," तुम किस को समझाने जा रहे हो, " यमुना को ?गोकुल को ?नंद बाबा को? तुम राधा के आंसू को धीर धरा सकोगे? यहां तो कान्हा के नाम का प्रेम पीयूष पिया है सब ने। यह सब प्रेमी लोग है, उद्धव तुम अपने ज्ञान का रंग इनके प्रेम के रंग पर कैसे चढाओगे?" ज्ञानी उद्धव प्रेम की भाषा कैसे समझ पाता?

तो सबके प्रेम को देख कृष्ण ने मथुरा जाने से पहले एक भव्य रास का आयोजन किया तब राधा बहुत दुखी और परेशान हो जाती है वह कृष्ण से कहती है कि ,"तूम मेरी पीड़ा नहीं समझते हो, मुझे कितनी पीड़ा हो रही है " कृष्ण मुस्कुराते हैं

'एक मीठे से झरने का पानी है हम ,जिसमें झरना ही सबसे बड़ा भाव है।

कृष्ण की मुस्कुराहट देख राधा कहती है," तुम्हें आज पता चलेगा कि राधा की पीडा क्या है ,अब तुम मेरे कपड़े पहनो और मैं तुम्हारे कपड़े पहनती हूं। जब तुम राधा रूप धारण करोगे ना, जब तुम्हारा ह्रदय भी राधा का ह्रदय हो जाएगा ना तब तुम्हें पता चलेगा कि प्रेम की पीड़ा क्या होती है" और कहते हैं राधा ने उस छलिया के छला जिसने सारे चराचर जगत को छला ।परंतु प्रेम में किसी को भी छल् लो वह छल नहीं होता वह निश्चलता होती है ,वो प्रेम होता है ,वह प्रार्थना होती है। राधा के इस छल को भी प्रेम का एक प्रतीक बताया गया है।फिर राधा ने कान्हा के वस्त्र पहने और राधा ने कान्हा को अपने वस्त्र पहनाएं। यह रास देखने स्वयं भगवान शिव भी नारी रुप धारण कर आएं। और एक भव्य रास हुआ। राधा ने मुरली धर के, मुरलीधर की ,मुरलीधर के साथ रास

रचाया। यह रास **एक दूजे में ऐसे समाया लगा ,जैसे प्रेम ने प्रेम को प्रेम सिखाया ।**

जो विश्व को नाच नचाता है उस शाम सुंदर को राधा प्रेम में नचा गई। राधा भाव विभोर होकर नाचने लगी तब कृष्ण ने अपने कमर से बासुरी निकाली और राधा को सोपते हुए बोले ,"राधे! यह बंसी सिर तुम्हारे लिए है अब मैं कभी बंसी नहीं बजाऊंगा" और कहते हैं उसके बाद श्रीकृष्ण ने कभी बंसी नहीं बजायी।

वो काला एक बांसुरी वाला सुध बिसरा गया मोरी रे ,सुध बिसरा गया मोरी ।

Notes…..

5 प्रेम के दो पहलू - एक सीता एक राधा

सुख के तो सभी साथी बन जाते हैं पर दुख का साथी मुश्किल से मिलता है ।धर्म, धैर्य, मित्र और स्त्री की परीक्षा तो सही मायने में विपत्ति के समय ही हो पाती है। विपत्ति की सबसे बड़ी परीक्षा से अगर कोई नारी गुजरी है तो वह है जगत जननी सीता ।करुणा के सागर भगवान राम की महारानी होना बहुत बड़ा सौभाग्य है किंतु माता सीता का पूरा जीवन परीक्षा के दौर से ही गुजरा। 14 वर्षों का वनवास तो केवल राम को ही था किंतु पत्नी धर्म निभाने के लिए देवी सीता भी राम के साथ चल पड़ी । सीता को जब कैकयी ने वन जाने से पहले आभूषण और राजसी वस्त्र उतार कर वनवासी वस्त्र धारण करने को कहा तब सीता ,शालीनता और धैर्य की मूर्ति बनी रही ।अग्नि परीक्षा के लिए भी वह सहर्ष तैयार हो गई ।श्री राम ने भले ही सीता का परित्याग किया हो पर सीता ने अपने दोनों पुत्रों को सदा श्रीराम का पावन चरित्र ही गाकर सुनाया और दोबारा स्वाभिमान को बचाने के लिए बिना किसी शिकायत किए, धरती मां से विनती कर धरती पुत्री धरती में समाहित हो गई। माता सीता का राम के प्रति प्रेम का उत्कृष्ट दर्शन और क्या हो सकता है।

अगर कभी हम माता सीता से पूछते कि वह बताएं कि भगवान राम कैसे थे क्योंकि उन पर तो बीती थी ना तो सही उत्तर की संभावना वहां भी बनती है। माता सीता के भाव कि अगर हम कल्पना करें तो शायद वह कहती,

" विश्व ने जाने राम को क्या क्या कहा पर मैं कहती रही राम ही सत्य थे राम ही सत्य थे

कब उन्होंने कहा मैं चलूं साथ में, पथ यह वनवास का मैंने ही था चुना,

वे तो गिनाते रहे राह की मुश्किलें, पर प्रेम थे वह मेरे, प्रेम मैंने चुना।

मैंने ही लाँघी थी सीमा की देहरी ,दोष किसका था ? मेरा या प्रभु राम का ?

राम न जाते, लक्ष्मण को ना भेजती ,सब मेरे ही किए का यह परिणाम था।

जिसको पाने के लिए दर-दर भटकते रहे, प्रेम के आगे सागर भी ना टिक सका

वे भला ऐसे कैसे मुझे त्यागेगे ,एक क्षण भी जो मेरे बिना ना रह सके

प्रेम जो अपना वह अग्नि पर धर दिए ,उनका उपकार था वह मेरे लिए

पीढ़ियां मुझको कुछ कहे ना इसलिए, सारे अपयश उन्होंने स्वयं पर लिए

तुमने देखी ना व्यथा श्रीराम की ,एक तरफ थी प्रजा एक तरफ थी जानकी

वह तड़पता ह्रदय भी ना तुम पढ़ सके, गढ़ ली थी परत जिसमें पाषाण की

कह लो कहना हो जो कह सको राम को ,पर ज्ञात हो ऐसा राजा नहीं पाओगे

धर्म को थामते लुट गया हो स्वयं, ऐसे त्यागी तपी को तरस जाओगे

विश्व ने जाने राम को क्या-क्या कहा

पर मैं कहती रही राम ही सत्य थे राम ही सत्य थे"

यह है माता सीता का प्रेम।

कहते हैं प्रेम सारे परमात्माओं का परमात्मा है, प्रेम इष्ट देवता है सारे देवताओं का, प्रेम से ही बंधा है पूरा जगत यह पृथ्वी, यह चांद तारे, ये आकाश। हमारी सारी प्रार्थनाओं का मकसद एक ही है कि प्रेम उत्पन्न हो जाए ।

एक दिन रुकमणी श्री कृष्णा से पत्नी रूप में अपना मान मांगती है ,अपना अधिकार मांगती है ।वह कहती है कि आपका और मेरा रिश्ता जन्मो जन्मो का है, आपने मुझे दिए गए सारे वचन भी निभाये है ,मुझे अपने पत्नी का भी मान दिया, सारे अधिकार भी दिए, मैंने आपको भी जीत लिया ।फिर जब गौरी शंकर के साथ, सीता राम के साथ पूजे जाते हैं तो आपके साथ में मै क्यों नहीं? आपके साथ राधा क्यों हैं ? यह प्रश्न रुकमणी के मन में हमेशा ही होता है।

भगवान कृष्ण एक बार यज्ञ करवाते हैं जिसमें राधा भी आई होती है । उस वक्त रुकमणी राधा से मिलने जाती है गर्म दूध का लोटा लेकर, उस राधा से जो कृष्ण की प्रेमिका थी ।राधा से कहती है," राधा जी हम आपसे मिलने आए थे ,आप यह दूध अगर ग्रहण कर लेगी तो बड़ी कृपा होगी " राधा बोलती है ,"जब से प्राण बल्लभ कृष्ण मुझे छोड़ कर गए हैं तब से मैंने दूध का स्पर्श तक नहीं किया पीना तो बहुत दूर की बात है"। रुकमणी के मुंह से निकल जाता है कि कृष्ण ने ही आपके लिए भेजा है ,यह सुनकर राधा उस पूरे गरम दूध को एक सांस में पी जाती है ।जब रुक्मणी लौट के आती है तो देखती है की कृष्ण के पैरों में छाले हुए है।कृष्ण के पैरों में छाले देखकर रुकमणी अपने इस व्यवहार के लिए कृष्ण से क्षमा मांगती हैं।

ऐसा अनोखा है राधा और कृष्ण का प्रेम।

"है प्रेम जगत में सार ,प्रेम के दो ही रुप निराले हैं

मोहन के चित्त में राधा है, राधा में मुरली वाले हैं।

एक सास में जब यूही पीलिया राधा ने खोलता हुआ द्रूध

रुक्मणी ने जब आकर देखा कान्हा के पैरों में छाले हैं।"

रुकमणी जो दावेदार थी ,पीछे छूट गई और भी दावेदार थी सब छुट्ती चली गई। और जो बिल्कुल गैर दावेदार था, जिसका कोई दवा नहीं था ,जिसे कृष्ण अपनी है ऐसा भी नहीं कह सकते थे वह राधा तो पराई थी ।रुक्मणी अपनी थी, रुक्मणी से संबंध विवाह का था ।राधा का संबंध सिर्फ प्रेम से था जिसका कोई दवा भी नहीं किया जा सकता था ।रुकमणी खो गई, राधा धीरे-धीरे प्रगाढ़ होते चले गई ।राधा के बिना हम कृष्ण को सोच ही नहीं सकते। राधा ने जब कृष्ण के लिए सब छोड़ा तो नाम में राधा आगे बढ़ गई, राधा कृष्ण कहलाई और बिना परिणय के वह प्रेम की पूजारन, कान्हा की पटरानी कहलाई ।

यदि प्रेम पुरा हो तो सीता-राम के जैसा और यदि प्रेम अधूरा हो तो राधे-श्याम जैसा।

6 अनूठा प्रेम

भरत को राज पाठ दिलाने के लोभ से कैकई ने प्रपंच रचा और राम को 14 वर्षों के लिए वनवास भेजा। भरत ने इस षड्यंत्र के लिए उत्तरदाई अपनी मां कैकई का त्याग कर दिया ,और भाई श्री राम के चरण पादुका सिंहासन पर रख राजपाट संभाला। राज्य से सुख त्याग कर नंदीग्राम वन में कुटिया बना कर रहे ।भरत का यह अटूट प्रेम हम सब जानते हैं ,परंतु राम भी भरत से अति प्रेम करते थे ।भरत की मनोदशा को भलीभांति समझते थे। उन्हें पता था कि भरत मेरी खोज में जरूर निकलेगा और बंधु प्रेम के खातिर प्रभु स्वयं धरती मां से हाथ जोड़कर विनती करते हैं जब एक बार उनका लक्ष्मण व सीता सहित चित्रकूट पर्वत की ओर जाना हुआ। तो उस कंटीली -पथरीली राह पर श्रीराम के चरणो में एक कांटा चुभ गया। तब वे ना रूठे ,ना क्रोधित हुए बल्कि हाथ जोड़कर धरती मां से अनुरोध करने लगे बोले," हे धरती मां! मेरी एक विनम्र प्रार्थना है आप से स्वीकार करोगी ?मेरी विनती है कि जब भरत मेरी खोज में इस रास्ते से गुजरे तो तुम नरम हो जाना ,कुछ पल के लिए अपने आंचल के यह पत्थर और कांटे छुपा लेना। मेरे पांव में कांटा चुभा सो चूभा किंतु मेरे भरत के पांव में आघात मत करना।" धरती मां को आश्चर्य हुआ उसने पूछा," भगवान! क्या भरत आपसे भी सुकुमार है ?आपने तो इतनी सहजता से कांटों को सहन कर लिया, क्या भरत यह नहीं कर पाएगा ?और आपके मन में भरत के लिए इतनी व्याकुलता क्यों है ?" श्री राम बोले ,"नहीं नहीं माता ! आप मेरे कहने का अर्थ नहीं समझी। भरत को यदि कांटा चुभा तो वह उसके पांव को नहीं उसके हृदय को पीड़ा देगा" धरती मां ने कहा," हृदय को पीड़ा? ऐसा क्यों प्रभु ?" राम ने कहा ,"मां !भरत को अपने कांटों की पीड़ा नहीं होगी बल्कि यह सोचकर होगी कि इसी कांटों भरी राह से मेरे भैया श्री राम गुजरे होंगे और यह काटे उनके पैरों में भी चुभे होगो ।मैया! मेरा भरत कल्पना में भी मेरी पीड़ा सहन

नहीं कर सकता इसीलिए उसकी उपस्थिति में आप कमल पंखुड़ियों सी कोमल बन जाना , मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करना"

जैसे भगवान राम का भाई के लिए अनूठा प्रेम था वैसे ही भगवान कृष्ण का भी बहन सुभद्रा के लिए अनूठा प्रेम था ।अपनी बहन सुभद्रा के संबंध में लिए गए दाऊ के उस निर्णय का भी उन्होंने प्रतिकार किया जब दाऊ ने यह तय कर लिया कि सुभद्रा का विवाह अपने प्रिय शिष्य दुर्योधन के साथ करेंगे। और जब बहुत समझाने के बाद भी दाऊ नहीं माने तो कृष्ण ही हो सकते हैं कि अपनी बहन को अपने प्रेमी के साथ भागने के लिए सहायता करें।

7 भक्ति एक उपहार

भक्तों को अपनी भक्ति के सामर्थ से वह भी संभव है जो कभी-कभी भगवान के लिए भी असंभव होता है।

शबरी की भक्ति अद्भुत थी।उसके गुरु, ऋषि मातंग ने उसे बताया कि एक दिन श्रीराम तेरी कुटिया में आएंगे । बस,उस दिन से शबरी श्रीराम के इंतजार में ही अपना समय बिताती। वह प्रतिदिन राम के स्वागत के लिए फूल -फल इकट्ठा करती, आश्रम का आंगन धोती,आश्रम सजाती।

एक दिन शबरी आश्रम के पास के तालाब में जल लेने गई। वहीं पास में एक ऋषि तपस्या में लीन थे, जब उन्होंने शबरी को तालाब में से जल लेते देखा तो उसे अछूत कह कर एक पत्थर फेंक मारा और पत्थर की चोट से शबरी के बहते रक्त की एक बूंद तालाब में गिर पड़ी और तालाब का सारा पानी रक्त में बदल गया। यह देखकर ऋषि, शबरी को बुरा भला कहने लगा, पापी कहकर चिल्लाने लगा ।शबरी रोते हुए अपने आश्रम चले गई। उसके जाने के बाद ऋषि ने फिर से तप किया, उसने बहुत से जतन किए लेकिन वह तालाब में भरे रक्त को जल नहीं बना पाया। उसमें गंगा यमुना सभी पवित्र नदियों का जल डाला गया लेकिन रक्त जल में नहीं बदला।

कई वर्षों बाद जब भगवान राम सीता हरण के बाद उनकी खोज में वहां आए तब वहां के लोगों ने भगवान राम को बुलाया और आग्रह किया कि वह अपने चरणों के स्पर्श से इस तालाब के रक्त को पुनः जल में बदल दे। राम उनकी बात सुनकर तालाब के रक्त को चरणों से स्पर्श करते है लेकिन कुछ नहीं होता। ऋषि उन्हें जो जो करने बोलते हैं, वे सभी करते हैं लेकिन रक्त जल में नहीं बदला। तब राम कहते हैं ,मुझे इस तालाब का इतिहास बताएं । ऋषि उन्हें शबरी और तालाब की पूरी कथा बताते हैं

और कहते हैं की भगवान यह जल उसी शुद्र शबरी के कारण अपवित्र हुआ है। तब भगवान राम दुखी होकर कहते है, "गुरुवर ! यह रक्त उस देवी शबरी का नहीं मेरे ह्रदय का है जिसे तुमने अपने अपशब्दों से घायल किया ।" भगवान राम ऋषि से आग्रह करते हैं कि मुझे देवी शबरी से मिलना है तब शबरी को बुलावा भेजा जाता है। "राम मेरे प्रभु !राम मेरे प्रभु! " कहती हुई जब वह तालाब के पास पहुंचती है तब उसके पैर की धूल तालाब में चली जाती है और तालाब का सारा रक्त जल में बदल जाता है।

यू रक्त का जल में बदलना भक्ति का हि तो सामर्थ है।

शबरी जैसे ही भगवान राम को देखती है ,चरणों को पकड़ लेती है ।अपने साथ आश्रम में ले जाती है

और अपने झूठे बेर वह राम को खिलाती है। वे प्रेम भाव से भरे झूठे बेर इतने अनोखे होते हैं कि प्रभु भी उसे उतने ही प्रेम से उसे खाते हैं और बेर बहुत ही स्वादिष्ट है कहते हैं।

'सबसे ऊंची प्रेम सगाई

झूठे फल शबरी के खाएं

बहू विधि स्वाद बताई

सबसे ऊंची प्रेम सगाई'

भगवान भक्तों की भावना को देखते हैं। वे तो सिर्फ प्रेम के भूखे हैं।

यहां त्रेता युग में भगवान श्रीराम ने शबरी के झूठ बेर खाएं वही द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण ने दुर्योधन के राजमहल का राजभोग छोड़ विदुर के यहां बथुआ का साग और सूखी रोटी खाई।

इतना ही नहीं स्नान करती विधु रानी कृष्ण कि मोहक आवाज सुनते ही अपनी सुध बुद् खोकर जिस अवस्था में थी वैसे ही कृष्ण

के स्वागत में द्वार पर आ गई। श्री कृष्ण के भक्ति में लीन विधुर की पत्नी को कृष्ण ने देखा तो अपना पीतांबर उनके ऊपर डाल दिया ।और जब विदुर की पत्नी कृष्ण को बिठा कर के प्रेम से केले की बजाय अकेले की छिलके खिलाने लगी तो वह भी प्रभु ने आनंद से खाएं।

'सबसे ऊंची प्रेम सगाई

दुर्योधन के मेवा त्यागो

साग विदुर घर खाई

सबसे ऊंची प्रेम सगाई'

राम की कथा में मनुष्य,जीव- जंतु यहां तक कि पत्थर भी महत्व पाते हैं।

भगवान श्री राम लंका पहुंचने के लिए वानर सेना की मदद से पुल बनवाने का कार्य शुरू करने लगे। वानर सेना बड़े-बड़े पत्थर उठाकर लाती ,हनुमान उन पर राम नाम लिख देते और नल नील उसे तैरा देते। इस महान कार्य में छोटी सी गिलहरी भी अपना योगदान दे रही थी। यह सब देखकर श्रीराम भी एक पत्थर उठाते हैं और पानी में फेंकते हैं किंतु वह पत्थर डूब जाता है। उन्हें आश्चर्य होता है की ये पत्थर डुब कैसे गया, वे दूसरा पत्थर फेंकते हैं वह भी डूब जाता है यह क्रम चलता रहता है। फिर पास खड़े हनुमान से पूछते हैं कि तुम लोग जो पत्थर फेंक रहे हो वह तैरते हैं और मैं जो पत्थर फेंक रहा हूं वह डूबते हैं। हनुमान मुस्कुराते हैं ,चरण पकड़ कर कहते हैं ,"हे प्रभु! मेरी आपसे विनती है कि आप पत्थर ना फेंके। प्रभु !आपने अपने भक्तों पर इतनी कृपा कि पत्थर तो आपके भक्त भी तैरा देते हैं लेकिन आप ही जब किसी को उठा कर फेंक दे, तो वह तो डूबेगा ही ।

भक्ति के उपहार से ,साधारण से पत्थर पर लिखा राम का नाम सागर भी डूबने नहीं देता

जहां एक तरफ भगवान के कार्य के लिए भारी पत्थर भी हल्के हो जाते हैं और पानी पर तैरते हैं वहीं दूसरी ओर इंद्र के कहर से हुई भारी बारिश से ब्रिज वासियों को बचाने के लिए भगवान कृष्ण गोवर्धन जैसे महान पर्वत को अपनी एक उंगली में उठाते हैं और भक्तों की रक्षा करते हैं।

भगवान राम जब युद्ध विजय के बाद अयोध्या लौटे, राज गद्दी पर बैठे तो उन्होंने एक बड़ा दरबार किया और जिन्होंने युद्ध में उनका साथ दिया था, उन सभी को पदवीया दी, पुरस्कार दिए। लेकिन हनुमान को कुछ भी नहीं दिया। जबकि हनुमान की सेवाएं सबसे ज्यादा थी। पास बैठी देवी सीता को यह समझ नहीं आया कि श्रीराम से यह भूल कैसे हो गई। छोटे मोटो को भी पुरस्कार मिले ,पदवीया मिली ,आभूषण मिले ,राज्य मिलें, बहुमूल्य हार मिले फिर हनुमान को कुछ क्यों नहीं ? उसे लगा "क्या राम भूल गए? पर ऐसा हो नहीं सकता। क्या राम को याद दिलाई जाए?" यह सीता को ठीक नहीं लगा। तो उसने हनुमान को बुरा ना लगे इसीलिए उन्हें चुपचाप बुलाकर अपने गले का मोतियों का हार दिया और कहते हैं कि हनुमान उस हार का एक एक मोती तोड़ तोड़ कर देखने लगे और फेंकने लगे। सीता ने देखा तो उससे कुछ अटपटा लगा उसने कहा ,"यह आप क्या कर रहे हैं? यह साधारण मोती नहीं है। यह बहुमूल्य मोती है, हजारों सालों में इस तरह के मोती इकट्ठे किए जाते हैं तब यह हार बना है। " हनुमान बोले ,"यह हार ना हीरो का है, ना मोती का है। यह हार तो पत्थर का है। जो मोती में राम का नाम नहीं वह मेरे किसी काम का नहीं। मुझे तो सिर्फ राम नाम का हीरा पता है और राम नाम का ही मोती पता है और मैं एक एक मोती चख कर देख रहा हूं, इसमें राम नाम का तो कहीं स्वाद नहीं है। इसीलिए फेकता जा रहा हूं" मां सीता समझ गई इसीलिए राम ने हनुमान को कोई पुरस्कार, कोई उपहार नहीं दिया। क्योंकि हनुमान के तो ह्रदय में राम थे ,उनके मन मंदिर में प्रभु का ही

बसेरा था। राम तो हनुमान के रोम-रोम में हैं।और जिसके पास भक्ति का उपहार है उसे दूसरा क्या उपहार देना?

सच्ची और सेवा भक्ति का प्रतीक है हनुमान। शायद इसीलिए हनुमानजी के इतने मंदिर भारत में है जीतने स्वयं भगवान राम के भी नहीं।

तन के तंबूरे में दो सांसों के तार बोले जय सियाराम।

भगवान विष्णु ने त्रेता युग में राम रूप मे अपने मित्रों को बिना मांगे ही उपहार दिए। विभीषण को लंका का राज्य और सुग्रीव को बाली का राज्य दिया। वही द्वापर युग में कृष्ण रूप में अपने मित्र सुदामा को याचना करने के बाद ही वैभव प्रदान किया।

श्रीराम एक ऐसे चरित्र है जिन्होंने एक पत्नी व्रत के वैदिक आदेश का पालन कर आदर्श स्थापित किया वहीं दूसरी ओर माता सीता ने अपने जीवन में केवल श्रीं राम से प्रेम कर सारे संसार के समक्ष पतिव्रता स्त्री होने का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया।

कृष्ण एक ऐसे चरित्र है जिनसे दो युगों मे ,दो महिलाओं ने प्रेम किया। द्वापर युग में राधा ने तो कलयुग में मीरा ने।

मीरा ने खुद घोषणा की थी कि वह कृष्ण के समय एक गोपी थी, ललिता नाम की। कलयुग में जब मीरा चार-पांच साल की थी तो उसके घर एक साधु मेहमान आऐ और जब साधु ने सुबह उठकर कृष्ण की मूर्ति निकालकर उसकी पूजा की तो मूर्ति को देख मेरा पागल सी हो गई , मूर्ति देखते ही उसे पूर्व स्मरण का आभास हुआ ,कृष्ण का सावला चेहरा उसे याद आ गया। मीरा लौट गई हजारों साल पहले अपने स्मृति में, रोने लगी और साधु से मूर्ति मांगने लगी लेकिन साधु ने नही दी, वह चला गया। मीरा ने खाना पीना छोड़ दिया ,चार पांच साल की मीरा और उसने खाना पीना छोड़ दिया एक मूर्ति के लिए। वह तो उस मूर्ति को लेकर रहेगी नहीं तो मर जाएगी ।

उस रात साधु ने सपने सपना देखा कि कृष्ण सामने खड़े हैं और कह रहे हैं, "यह मूर्ति जिसकी है उसे लौटा दे। तू वापस जा और मूर्ति उस लड़की को दे दे।" साधु घबराया और आधी रात भागा मीरा से कहा, "यह रही तुम्हारी मूर्ति ,मुझे क्षमा करें।"

मीरा उस मूर्ति के साथ मस्ती में रहने लगी। दो वर्ष बाद पड़ोस में किसी का विवाह चल रहा था और यह सात आठ साल की मीरा ने मां से पूछा," सब का विवाह होता है, मेरा कब होगा ?और मेरा वर कौन है ?" और मां ने ऐसे ही मजाक में कह दिया क्योंकि मीरा उस वक्त भी उस मूर्ति को छाती से लगाए खड़ी थी "तेरा वर्, तेरा वर तो यही है ,यह गिरधर गोपाल, यह गिरधरलाल यही तेरे वर है और क्या चाहिए?" मां को क्या पता था कि कभी कभी मजाक में कही बातों से भी यह सब हो सकता था। मीरा ने मान ही लिया कि कृष्ण ही उसके पति है उस दिन से उसने अपना सारा प्रेम कृष्ण पर उन्ठेल दिया।

पहले अकेली बात करती थी ,फिर कृष्ण भी बोलने लगे। यह नाता भक्त और भगवान का हो गया ।मीरा छोटी सी थी की मीरा की मां चल बसी। फिर बाबा ने पाला ,बाबा भी चले गए फिर सतरा अट्ठारह साल की उम्र में उसका विवाह हुआ। फिर मीरा के पति भी चले गए। फिर ससुर ने संभाला और फिर एक दिन ससुर की मृत्यु हो गई। पिता ने उसकी देखभाल की फिर पिता भी चल बसे। ऐसा जब मेरा तीस बतिस साल की थी तो उसके जीवन में जितने भी महत्वपूर्ण व्यक्ति थे सभी चले गए ।अब सारा प्रेम कृष्ण पर चला गया क्योंकि मां से लगाव था ,मां चल बसी तो जो मां के प्रति जो प्रेम था वह गोपाल में झोंक दिया। फिर बाबा ने पाला और बाबा भी चल बसे, उनसे जो प्रेम था वह भी गोपाल के चरणों में रख दिया ऐसा मीरा का संसार छोटा होता चला गया और परमात्मा बड़ा होता गया।

मीरा जब 32 साल की थी तब तक पांच लोगो की मृत्यु हो गई थी। और तब उसका मन संसार से विरक्त हो गया और कृष्ण में

अनुरक्त हो गया। धीरे-धीरे पहले तो मीरा घर में ही नाचती थी कृष्ण की मूर्ति के सामने। फिर गांव के मंदिरों में साधु संत के सत्संग में नाचने लगी फिर प्रेम इतना बढा कि उसे होशो हवास न रहा।

ऐसी लागी लगन मीरा हो गई मगन

वो तो गली गली हरी गुण गाने लगी

महलों में पली बनके जोगन चली

मीरा रानी दीवानी कहाने लगी।

वह मगन हो गई ,तल्लीन हो गई ,वह कृष्णमय हो गई। मीरा राजघराने की महिला थी तो परिवार को लोक लाज की बात आ गई। राजस्थान में जहा स्त्रियां घुंघट से जहा बाहर आती नहीं थी, जिनका चेहरा भी लोग नहीं देखते थे और ऐसे मे राजघराने की महीला रास्तों पर नाचने लगी। उस समय मेवाड की गद्दी पर उसके देवर रुकमाजीत सिंह थे। वह क्रोधी और दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति था। उसे यह बर्दाश्त के बाहर था। और मीरा की प्रतिष्ठा भी उसे बर्दाश्त नहीं हो रही थी। मीरा की इतनी प्रतिष्ठा हो गई थी कि साधारण लोग तो आते ही थे पर दूर-दूर से संत साधू खाती उपलब्ध लोग भी मीरा से मिलने आने लगे। उसके देवर ने मीरा को परेशान करना शुरू कर दिया।

मीरा को जहर का प्याला दिया गया उसने कृष्ण का स्मरण कर जहर भी अमृत की तरह स्वीकार कर लिया और जहर भी अमृत बन गया। फिर सॉप भेजा उसने पिटारी खोली थी तो मीरा को सांवले कृष्ण ही दिखाई पड़े उसने सांप को उठाकर गले से लगा लिया। ऐसा बहुत तरीकों से परेशान किया गया उसका गांव में रहना मुश्किल हो गया तो उसने राजस्थान छोड़ दिया फिर कृष्ण के गांव वृंदावन चली गई।

जब मीरा वृंदावन के सबसे प्रतिष्ठित मंदिर में पहुंची तो उसे रोकने की कोशिश की गई क्योंकि उस मंदिर में स्त्रियों का प्रवेश निषिद्ध था। लेकिन जो लोग द्वार पर खड़े थे मीरा को रोक नहीं पाए जब मीरा नाचती हुई आई। जो द्वारपाल खड़े थे वह भी मीरा के भजन में लीन हो गए और भूल गए कि मीरा को रोकना है। तब तक मीरा अंदर जा चुकी थी। पुजारी घबरा गया, उसने वर्षों से किसी स्त्री को नहीं देखा था उसने मीरा से कहा," तुझे समझ नहीं है क्या इस मंदिर में महीला का प्रवेश निषेध है " मीरा ने सुना उसने कहा ,"मैं तो सोचती थी कि कृष्ण के अतिरिक्त और कोई पुरुष नहीं है ,क्या तुम भी पुरुष हो ?"

पुजारी क्रोधित हो गया उसने कभी किसी को ऐसे कहते नहीं देखा। इस घटना के बाद मीरा को वृंदावन में भी टिकने नहीं दिया उसके साथ बहुत दुर्व्यवहार किया गया।

मीरा को वृंदावन भी छोड़ना पड़ा उसके बाद वो द्वारका चली गई। बहुत सालों बाद मेवाड मे जब उदय सिंह राजा बने। तब उदय सिंह को मीरा के प्रति बहुत भाव था उसने अनेक संदेशवाहक भेजे मीरा को लेकर आने के लिए, मगर सभी संदेशवाहक वापस खाली हाथ लौट आते। मीरा कहती "अब कहां आना जाना। इस प्यारे के मंदिर को छोड़कर कहां जाऊं मैं।" रणछोड़ दास के मंदिर में ही रहती फिर राजा ने बहुत कोशिश की और अपने सौ आदमियों का जत्था भेजा कहा कि किसी भी तरह मीरा को वापस ले आना, अगर ना आए तो धरना दे देना, कहना हम उपवास करेंगे वही मंदिर में मर जाएंगे। मीरा ने जब यह सुना तो मीरा ने कहा, "अगर ऐसा ही है ,चलना ही होगा मुझे,तो मैं अपने प्यारे से पूछ लेती हु,उनकी बिना आज्ञा के तो मैं कहीं भी ना जा सकूंगी।" वह अंदर गई और कहते हैं की वह जो अंदर गई फिर बाहर नहीं लौटी ,वह कृष्ण की मूर्ति में समा गई।

प्रेम के गीत अब क्या गाय कोई

गाना था जो सब गा गई मीरा।

कृष्ण ने द्वापर में राधा को गाया

तो कलयुग में कृष्ण को गा गई मीरा

कृष्ण के प्रेम का राधा पे कर्ज था

राधा का कर्ज चुका गई मीरा ।

कहते हैं कृष्ण ने सभी में राधा को देखा और मीरा ने कृष्ण के अलावा सभी में स्त्री को देखा। वह केवल कृष्ण को ही पुरुष मानती थी। द्वापर युग में कृष्ण ने राधा से इतना प्रेम किया कि राधा पर कृष्ण के प्रेम का कर्ज चढ गया और कलयुग में मीरा ने कृष्ण से इतना प्रेम किया कि राधा का सारा कर चुकता कर दिया।

'मीरा प्रेम और भक्ति की परम चरम है। '

भक्ति एक उपहार है जो हारकर ही मिलती है।

Notes…..

8 विनम्रता के स्वामी

जीवन में आगे बढ़ने के लिए, ख्याति यश कीर्ति के लिए सद्गुणों और अच्छे कर्मों की अहम भूमिका होती है क्योंकि गुण ही मनुष्य को असाधारण और विलक्षण प्रतिभा का स्वामी बनाता है। इंसान को अपने जीवन में सफल होने के लिए किन खास गुणों पर ध्यान देना चाहिए यह रामायण के राम जी और महाभारत के श्री कृष्ण के माध्यम से बताया गया है।

राम व कृष्ण ने मानवीय रूप में जन- जन का भरोसा और विश्वास अपने आचरण और असाधारण गुणों से ही पाया है। उनकी चरित्र की खास खूबियों से ही वे युग युगांतर में भगवान के रूप में पूजित हुए और राम से श्रीराम व कृष्ण श्रीकृष्ण कहलाए।

श्री राम ने जाति वर्ग से परे होकर सभी को अपनाया। नर हो या वानर, मानव हो या दानव सभी से रिश्ता बनाया। निषादराज हो या सुग्रीम, शबरी हो जटायु यहां तक कि राक्षस जाति के विभीषण को भी साथ लेकर चलने लगे।

वही कृष्ण को बचपन में अपने रंग को लेकर बार-बार उपहास सहना पड़ा था। उनके काम को लेकर उनको ग्वाला- ग्वाला कह कर अपमानित करने का प्रयास बचपन से लेकर महाभारत के युद्ध तक हर जगह किया गया था। जबकि काम को लेकर द्रौपदी ने कर्ण को सूत पुत्र कहा था, जिसका बदला कर्ण ने भरी सभा में द्रौपदी का अपमान करके लिया था। कृष्ण ने कभी भी बदले की भावना नहीं रखी। उन्होंने सिर्फ सत्य को पकड़ कर रखा था। धर्म को अपने भीतर तक धारण किया था ।

अपने पूज्य पिता के सहयोगी और देवासुर संग्राम में उनके वांप पार्श में लठे जटायु के कटे पंखों को लेकर जब राम बैठे थे अपने गोदी में पक्षीराज को लेकर तब राम ने कहा कि आप कहे तो मैं आपके पंखों का उपचार कर दूं। जटायु ने कहा ,"है पुत्र! इस

पृथ्वी पर मेरी उम्र पूरी हो चुकी है मुझे साकेत धाम जाने दो अपने पिता के पास।" तब राम ने रोते हुए कहा कि मैं ऐसा दूरभाग्यशाली पुत्र हूं कि अपने पिता का अंतिम संस्कार नहीं कर पाया। आप मेरे पिता के मित्र है इसलिए आप मेरे तात है तो मुझे अनुमति दे कि मैं पुत्र की तरह जलधार में खड़ा होकर तर्पण कर सकूं। पशु पक्षी से इतना प्रेम करने वाले राम को जब जटायु ने पूछा कि आकाश में जाकर, स्वर्ग में जाकर आपके पिताजी से कुछ कहना है क्या? तो जिनकी पत्नी रावण छल से हरण करके ले गया है, जो वन- वन भटक रहे हैं ,उनका अपने पुरुषार्थ पर पूरा विश्वास है लेकिन अहंकार किस तरह शून्य है। राम कहते हैं कि ,"जो मैं राम तो कुल सहीत कहे दशानन आए " अर्थात अगर मैं उनका सच्चा पुत्र हूं तो रावण खुद आकर बताएगा की क्या हुआ था। इस आत्मविश्वास का नाम राम है।

असीम ताकत अहंकार को जन्म देती है लेकिन अपार शक्ति के बावजूद भी राम विनम्र थे।

भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में अतिथि का सत्कार कर स्वयं अतिथि के चरण धोए और झूठे पत्तल उठाएं। महाभारत के युद्ध में दुर्योधन को अपनी पूरी नारायणी सेना को देने के उपरांत खुद योद्धा ना बनते हुए वह अर्जुन के सारथी बने और पांडवों को विजय दिलाई।

जीवन में ऊंचा उठने के लिए पंखों की ज़रुरत केवल पक्षियों को ही पड़ती है मनुष्य तो जितना विनम्रता से झुकता है उतना ही ऊपर उठता है।

9 तुम चंदन हम पानी

अपने भक्तों के आगे स्वयं भगवान भी असहाय हो जाते हैं। हो भी क्यों ना? जब भक्त पूरी श्रद्धा और भक्ति भाव से अपना सर्वत्र प्रभु के चरणों में अर्पित कर देते हैं तो ऐसे भक्तों की बात भला कौन टाल सकता है?

श्रीराम की विनम्रता और सहजता की जितनी व्याख्या की जाए कम है। अपने भक्तों के लिए कभी झूठे बेर खा लेते है तो कभी एक पांव पर खड़े हो जाते हैं। यह समाज व्यवस्था की अद्‌भुत घटना है। भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के साथ वनगमन के लिए जब प्रस्थान करते हैं, तो उनकी भेंट केवट से होती है। गंगा पार करने के लिए प्रभु श्रीराम केवट को पुकारते हुऐ कहते हैं कि "नाव को किनारे लाओ, गंगापार जाना है" । परंतु केवट नाव नहीं लाते और श्रीराम से कहते कि ,"आपके चरणो की धूल के लिए सब कहते हैं कि ,वह मनुष्य बना देने वाली कोई जड़ी बूटी है" । केवट माता अहिल्या को पत्थर से महिला बनने की कथा को जानता था। वह कहता है "पहले आप पांव धुलवाओ फिर नाव पार चढ़आऊंगा !" अयोध्या के राजकुमार केवट जैसे सामान्य जन का निहोरा कर रहे हैं। केवट के इस बर्ताव से लक्ष्मण को क्रोध आ जाता है और वे अपना धनुष उठा लेते हैं। तब केवट बहुत ही प्रेम से कहते है की "मार दो प्रभु! इससे बड़ा सौभाग्य मेरे लिए क्या होगा? सामाने स्वयं भगवान श्रीराम, माता सीता और गंगा तट? इससे अच्छी मृत्यु मेरे लिए और क्या हो सकती है।?" केवट की बात सुनकर लक्ष्मण का क्रोध शांत हो जाता है। और केवट प्रभु राम के पैर धोने लगता है। केवट एक पैर धोता है तो दूसरा पैर मिट्टी में लिपट जाता है और दूसरा धोता है तो पहला मिट्टी में लिपट जाता है। इस स्थिती से केवट बहुत दुखी हो जाता है। भक्त के इस दुख़ को देख स्वयं भगवान एक पैर पर खड़े हो जाते है। प्रभु को एक पैर पर खड़ा देख, केवट

कहता है कि प्रभु आप मेरे सिर पर हाथ रखिए ।साक्षात परमात्मा अपना हाथ केवट के सिर पर रखते है यह देख आसमान से देव पुष्पों की वर्षा करते है। भगवान और भक्त का अनन्य प्रेम देखकर सारी देवी देवताओं के मन भर आता है। गंगा के पानी से चरण धोने के बाद वह चरणामृत केवट पहले खुद पिता है फिर अपने परिजनों को और अपने बंधुजनों को देता। इतना ही नहीं केवट ने अपने पितरों को भी भगवान का चरणामृत पिलाकर मुक्त कराया। फिर केवट अपने नाव में ,जो जगत की धार है उनको नदी की धार में ले चलते है। और रामजी को संवार कर खुद का जन्म संवारते है ।उनको नदी के पार ले जाते है जो सबको भवसागर पार कराते है। और जब माता सीता उपहारस्वरूप अंगूठी देनी चाहती है तो केवट मना करते हुए प्रभू को कहते हैं कि एक केवट दूसरे केवट से कुछ कैसे ले सकता है? यह सुनकर श्रीराम ने कहा, मैं तो केवट नहीं हूँ। तब केवट ने कहा,"मैं केवट तो केवल गंगा पार कराता हूँ परंतु आप केवट, आप तो मनुष्य को जीवन मृत्यु से मुक्ति दिलाकर भवसागर पार कराते हैं। अगर कुछ देना ही है प्रभु तो जैसे मैंने आपको गंगा पार करवाया, वैसे ही आप मुझे यह भवसागर पार कराऐ" केवट की बुद्धिमता, भक्ति देखकर भगवान उसे मृत्यु के बाद मोक्ष प्राप्ति का वरदान देते है।

मनुष्य अक्सर जाति रंग रूप मान प्रतिष्ठा को देखकर व्यवहार करता है किंतु भगवान के लिए प्रेम ही सब कुछ है।

भगवान श्री कृष्ण जब बृंदावन से मथुरा आए तब उन्होंने देखा कि एक दिन एक कुबडी दासी अपने हाथ में फूल व चंदन का थाल लिए कंस के दरबार जा रही हैं। वह शरीर से कुबड़ी थी इसीलिए सब उसे कुब्जा कहते। जब कृष्ण ने उसे पुकार लगाई ,"हे सुंदरी !" और जैसे ही सुंदरी सुना तो कुब्जा के नेत्रों से अश्रु की धाराएं बहने लगी। आज तक उसे किसी ने सुंदरी कहा ही नहीं। हमेशा सभी ने उपहास किया उल्टी-सीधी बातें कहीं। वह लजा गई और कहने लगी ,"प्रभु मैं तो कितनी कुरूप हूं ,मैं तो कितनी जगह से

टेढ़ी हूं ,आप मुझे सुंदरी कह रहे हैं? ऐसा मत कहो मेरा उपहास ना करो " श्री कृष्णा ने कहा," हे सुंदरी! मैं तुम्हारा उपहास नहीं कर रहा हूं। मेरी दृष्टि में तो तुम निश्चित ही सुंदर हो ,क्या तुम हमें थोड़ा चंदन लगा दोगी?"। कृष्ण से सम्मोहित हुई कुब्जा विरोध नहीं कर सकी उसने कृष्ण को चंदन लगाना शुरू किया किंतु वह कुबड़ी होने के कारण उसका हाथ कृष्ण के माथे तक नहीं पहुंच पा रहा था। वह बहुत कोशिश करने लगी परंतु उसका हाथ भगवान के माथे तक पहुंच ही नहीं पा रहा था। बहुत से मथुरा वासी यह दृश्य रुक रुक कर देखने लगे तब भगवान ने उसके पैर को अपने अंगूठे से दबाया और अपनी तर्जनी उंगली से कुब्जा की ठोड़ी पकड़ कर एक झटके में उठा दिया। उसे आश्चर्य हो गया ,कुब्जा का शरीर एकदम सीधा हो गया। उसे एक अनोखा सौंदर्य प्राप्त हो गया था। जब कुब्जा ने अपना शरीर देखा तो वह श्री कृष्ण के चरणों में गिर पड़ी और खुद को कृष्ण के चरणों में अर्पण कर दिया

भगवान राम ने अपने चरण स्पर्श से माता अहिल्या को पत्थर से नारी बनाकर उन पर असीम कृपा की और भगवान कृष्ण ने अपने स्पर्श से कुबड़ी कुब्जा को अनोखा सौंदर्य प्रदान कर उस पर कृपा बरसाई।

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी

Notes…..

10 एक इशारा

महाभारत युद्ध में अर्जुन जब युद्ध के मैदान में आए तो सामने खड़ी कौरवों की सेना, प्रतिद्वंदी रूप में अपने गुरु द्रोणाचार्य, पितामह भीष्म और कंजन भाइयों को देख कर, अर्जुन युद्ध करने से इनकार करते हैं। जिन गुरु से उसने शिक्षा ली है,उनके खिलाफ़ कैसे युद्ध करें? जिन पितामाह की गोद में खेले हैं, उन पर बाण कैसे चलाएं? और बाकी सारे उसके भाई सबको देखकर अर्जुन कहता है," हे माधव ! मेरा मन शिथिल हुआ जा रहा है। तथा युद्ध में, मैं मेरे अपनों को मारू इसमें कोई कल्याण भी नहीं दिखाई देता है। हे कृष्ण! मैं न विजय चाहता हूँ, न राज्य।

" और ऐसी बहुत सी बातें बोलकर अर्जुन रणभूमि में शोक से पीड़ित होकर बान सहित धनुष्य का त्याग कर देता है। और तब श्रीकृष्ण अर्जुन को गीता का ज्ञान देना आरंभ करके उसका समाधान करने की कोशीश करते हैं। किंन्तु अर्जुन तो प्रश्नों पर प्रश्न पूछता चला जाता है और कृष्णा उत्तर पर उत्तर देकर समाधान करने की कोशीश करते रहते हैं। स्वयं भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को समझा रहे हैं किंतु अर्जुन है कि समझ ही नहीं रहा है। वे कह रहे है की ," हे अर्जुन! किन धर्मों में उलझा है तु ,किन सिद्धांतों और शास्त्रों में उलझा है तु, मैं स्वयं तेरे सामने खड़ा हूँ और तू शास्त्रों में उलझा हुआ है। तू मेरे शरण आ। परन्तु अर्जुन अब भी व्यथा में है, शंका में है ,और शायद हैरान भी ,कि कृष्णा मेरे सीखा है बचपन के मित्र हैं। मेरे सारथी है युद्ध में और मुझसे कह रहे है मेरी शरण आ।

अर्जुन की इस नासमझी को देखकर अन्त में कृष्ण को अपना विराट रूप दिखाना पड़ता है।

अर्जुन को बहुत समय लगा,सामने खड़े कृष्ण में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण है यह समझने में। किंतु हनुमान? वे तो राम को जानते ही समझ गए कि ये श्रीराम है। हनुमान ने श्रीराम से कभी प्रश्न

नहीं किये। वे तो सिर्फ श्रीराम की आज्ञा का पालन करते रहें। लक्ष्मण और मेघनाथ के भीषण युद्ध के दौरान लक्ष्मण जब मूर्छित हो गए युद्ध भूमि पर। तब विभीषण ने सुरसेन नाम वैद्य को बुलाने का परामर्श दिया। सुरसेन ने हिमालय पर्वत की गोद में संजीवनी नामक जड़ी बूटियों को लाने का सुझाव दिया, जिससे लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा की जा सकती थी। अपने प्रभु श्रीराम का दुख निवारण करने के लिए पवन पुत्र हनुमान ने बिना किसी प्रश्न के, बिना किसी संदेह के प्रभु की आज्ञा का पालन किया और सूर्योदय से पूर्व संजीवनी लाकर लक्ष्मण के प्राण बचाए।

श्रीकृष्ण ने अर्जुन को शस्त्र उठाने की आज्ञा देने के बाद भी अर्जुन ने कई प्रश्न किए और हनुमान ने सिर्फ आज्ञा पालन किया। अर्जुन को समझाने के लिए श्री कृष्णा को पूरी गीता बोलनी पड़ी। हनुमान तो प्रभु के बिना कुछ कहे ही समझ जाते थे। हनुमान भगवान श्री राम के निर्णय को सर्वोपरि मानकर उनके अनुसार अपना जीवन यापन करते हैं। हनुमान और श्रीराम के बीच या कहे भक्त और भगवान के बीच ऐसा मिलन जहां जरा भी फासले ना रहा। इसीलिए हनुमान श्री राम के दास कहलाए अर्जुन कृष्ण के नहीं ।

दास हो तो हनुमान जैसा या फिर रज्जब जैसा, जिसने अपने गुरु के एक वाक्य से अपना मौर मुकुट फेंक दिया।

ऐसे ही एक दास रज्जब की कहानी। रज्जब को एक लड़की से प्रेम हो गया था। मुश्किल से घर वाले विवाह के लिए राज़ी हुए। विवाह का दिन आया, बारात सजी, रज्जब घोड़े पर संवार हुए। सिर पर मौर बांधा। बाराती साथ में थे ,ससुराल के लोग स्वागत के लिए तैयार थे। और अपने ससुराल को पहुंचने पर ही थे कि वहाँ एक अजीब सा आदमी आकर खड़ा हो गया। दादू दयाल नाम था उनका,वे ही बाद में रज्जब के गुरु बने। दादू दयाल ने गौर से रज्जब को देखा और रज्जब को कहा। “रज्जब तै गज्जब

किया, सर पर बांधा मौर, आया था हरी भजन को करें नरक की ठौर" रज्जब ने बस इतनी सी बात सुनी और घोड़े से कूद पड़ा। मौर उतार कर रख दिया और कहा कि "धन्यवाद ,आपने मुझे सही समय पर चेता दिया, गड्ढे के किनारे ही था और गिरने से बचा लिया। " और सदा के लिए दादूदयाल का हो गया। बारातियों ने बहुत समझाया, ससुराल के लोगों ने समझाया। वो रज्जब जिसका विवाह प्रेम विवाह था, वह प्रेयसी से मिलने आतुर था, विवाह के लिए आतुर था। परन्तु उसने दादू से ये भी ना पूछा,ये भी ना कहा कि, ये भी कोई समय था? जिसका मुझे बेसब्री से इंतजार था, उसी घड़ी आ गए? ये कोई मौसम था ? लेकिन दादूदयाल के वे शब्द, दादू की आँखों में आंखें डालकर देखना, वो इशारा ही काफी था। ऐसी तीव्रता से रज्जब दादू का शिष्य बना शायद कोई बना हो। वह एक घड़ी में पूरा ही परिवर्तित हो गया और दादू के साथ चल दिया। दादू रज्जब को रोज़ हरिभजन में बैठा देखते। दादू ने सोचा भी न था कि रज्जब इतनी जल्दी छलांग लगा लेगा और दादू को लगने लगा कि मैंने ये क्या कर दिया? इस भोले युवक को कुछ दिन संसार में बिता लेने देता और फिर जाता। तो दादू ने कुछ महीनों बाद रज्जब से कहा कि," तुने ठीक किया की मेरी बात मान ली। अब मेरी एक बात और मान ,तू संसार में उतर जा!" रज्जब ने जिसे आंख से दादू को देखा ,की दादू दोबारा यह बात उठा ही नहीं पाए। वह चमकती आंखें, रज्जब ने एक शब्द भी नहीं कहा। सिर्फ दादू की आँखों में देखा और सब कह दिया, "सारे नासमझ लोग ये कहते है वो ठीक है। पर आप से सुनू यह बात, यह बात दोबारा उठाना ही मत " यह कहा भी नहीं, सिर्फ आंखो की चमक ने सब कह दिया। फिर रज्जब छाया की तरह दादूदयाल के साथ रहा। उनकी सेवा में लगा। वे चरण ही उसके लिए सब कुछ हो गए। और जब दादूदयाल ने शरीर छोड़ा तो उसने अपनी आंखें बंद कर ली और फिर कभी नही खोली। लोग पूछते थे की आंखें क्यों नहीं खोलते? तो वह कहता ," जो देखने योग्य जो था उसे देख लिया। अब देखने को क्या है "। दादूदयाल के अंतर्ध्यान होने के

बाद कई वर्षों तक रज्जब जीवित रहा लेकिन कभी आँखें नहीं खोली।

जीवन परिवर्तन के लिए एक इशारा ही पर्याप्त है।

Notes…..

11 अद्भुत शत्रु

राम स्वयं विष्णु का एक रूप, जिनकी सीता जैसी पतिव्रता पत्नी हो, लक्ष्मण और भरत जैसे अनूठे भाई हो ,उनका शत्रु भी कोई साधारण नहीं हो सकता था। उनका शत्रु जो दस सीरो वाला दशानन, सारस्वत ब्राह्मण पुलतसय ऋषि का पौत्र,भगवान शिव का एक परम भक्त, महा प्रतापी, महा पराक्रमी योद्धा ,शास्त्रों का प्रखर ज्ञाता ,प्रकांड विद्वान पंडित और महाज्ञानी ,कुंभकरण अहिरावण महिरावण जैसे भाई और मां के लिए जिसने कैलाश पर्वत तक को हिला दिया ऐसा महाबल शाली रावण था।

जब राम ने लंका विजय के लिए यज्ञ करना चाहा तो यज्ञ के लिए ब्राह्मण की आवश्यकता पड़ी ,तब जामवंत ने बताया कि इस पूरे परिसर में सिर्फ एक ही विद्वान ब्राह्मण है और वह हमारा शत्रु रावण ही है ।राम ने जामवंत को लंका भेजा ,जामवंत रावण को बुलाने लंका पहुंचे और उन्होंने रावण से कहा कि मेरे यजमान के आप आचार्य बने रावण ने पूछा ,"आपका यजमान कौन है ?"जामवंत ने कहा कि अयोध्या के राजकुमार महाराज दशरथ के पुत्र श्रीराम मेरे अजमान है और वह यज्ञ एक यज्ञ करना चाहते हैं ।भगवान शिव के लिंग को स्थापित करना चाहते हैं अपने एक बड़े काम के लिए। रावण ने पूछा ,"क्या यह बड़ा काम लंका विजय तो नहीं ?"जामवंत ने कहा ,"आचार्य आप ठीक समझ रहे है, यह लंका विजय का ही यज्ञ है ।तो क्या आप आचार्य पद स्वीकार करेंगे ?"रावण भी प्रतिभाशाली था उसने कहा कि मुझे राम का आचार्य बनना स्वीकार है। जामवंत ने कहा ," पूजा के लिए क्या क्या व्यवस्था करनी होगी ?क्या क्या सामग्री लगेगी?" तब रावण ने कहा ,"क्योंकि हमारा यजमान वनवासी है और अपने घर से बाहर है इसीलिए शास्त्र की परंपरा है की सारी चीजों की तैयारी आचार्य को स्वयं करनी होती है तो सारी तैयारी हम करेंगे "फिर रावण पूजा की सारी सामग्री अपने साथ लेकर

सीता के पास गए और कहा ," समुद्र पार तुम्हारे पति और मेरे यजमान राम ने लंका विजय के लिए एक यज्ञ का आयोजन किया है और मुझे उस यज्ञ मैं आचार्य के रुप में बुलाया है । पूजा की सारी सामग्री के साथ साथ यजमान के अर्धांगिनी की व्यवस्था करना यह भी मेरा कर्तव्य है ।तो मैं आचार्य रावण के नाते तुम्हें यह कहता हूं यह पुष्पक विमान है ,इसमें तुम बैठ जाओ लेकिन याद रखना, इसमें भी तुम मेरी ही कैद में हो "और कहते हैं देवी सीता ने रावण को आचार्य कहकर प्रणाम किया और कहा "जो आज्ञा आचार्य "और उनके प्रणाम करने पर उसी रावण ने मां सीता को अखंड सौभाग्यवती का आशीर्वाद दिया।

फिर जब रावण पहुंचा आचार्य बनकर राम के पास पहुंचा तो दोनों भाइयों ने उठकर आचार्य को प्रणाम किया और कहा कि आचार्य मैं आपका यजमान आपको प्रणाम करता हूं। मैं लंका विजय के लिए एक यज्ञ कर रहा हूं और मैं चाहता हूं कि महादेव मुझे आशीर्वाद दे कि मैं लंका पर विजय प्राप्त कर सकूं।" यह लंकेश से कह रहे है राम । रावण ने कहा ,"अगर ईश्वर चाहेंगे तो आपको उस यज्ञ का फल अवश्य प्राप्त होगा।"

रावण ने कहा ,"यज्ञ के लिए आप और आपकी धर्मपत्नी साथ मैं बैठे। उन्हें बुलाइए" राम ने कहा कि मेरी धर्मपत्नी तो उपस्थित नहीं है यहां। तब जामवंत ने रावण से पूछा कि इसके लिए कोई और व्यवस्था है ?रावण ने कहा कि आचार्य की जिम्मेदारी के नाते मै अर्ध यजमान देवी सीता को मेरे साथ ले आया हूं। मेरे विमान में देवी सीता बैठी हुई है उसे आप ले आइए ।

फिर उसके बाद विधिवत पूजन हुआ। यज्ञ संपन्न हुआ ,राम और सीता ने रावण को प्रणाम किया। राम ने पूछा ,"आचार्य आपकी दक्षिणा?" रावण ने कहा," स्वर्णमई लंका के राजा को आप इस वनवास में क्या दक्षिणा देंगे? आचार्य होने के नाते मैं आपसे यह दक्षिणा मांगता हूं कि जब मेरा अंतिम समय आए तब यजमान

मेरे सामने उपस्थित रहे।" रावण भी जानता था सामने खड़ा यजमान कौन है और उससे क्या मांगना चाहिए।

श्री राम और रावण के बीच युद्ध हुआ। अंतिम युद्ध के बाद रावण जब युद्ध भूमि पर मृत्यु शैया पर पड़ा था तब भगवान राम ने ही लक्ष्मण से ,अपने शत्रु महापंडित रावण से राजनीति और शक्ति का ज्ञान प्राप्त करने को कहा ।अद्भुत शत्रुता थी राम और रावण के बीच। और कहते हैं रावण ने अपने अंतिम समय श्रीराम का ही नाम लिया।

राम की कहानी ऐसी आस्था और विश्वास की कहानी है कि अंधकार चाहे गहरा हो, सात समंदर पार हो सदा उजाला ही विजई हुआ है अगर सत्य आधार हो।

जहां राम के शत्रु ईतने अद्भुत हो सकते हैं वहां श्री कृष्ण के शत्रु साधारण कैसे रहेंगे

व्यक्ति का जन्म होने से पूर्व व जन्म होते ही उसके सारे सगे संबंधी उसके आने से प्रसन्न व आनंदित होते हैं ।संसार में आने के बाद जैसे-जैसे हमारा जीवन बढ़ता है ,जीवन के कुछ पड़ाव पर हमारे शत्रु निर्मित होते हैं ।परंतु कृष्ण के शत्रु तो कृष्ण के जन्म से पहले ही बन चुके थे । शत्रु भी दूसरा कोई और नहीं उनका अपना मामा, मथुरा का राजा कंस था।

जहां एक मामा शकुनि थे जिन्होंने भांजे प्रेम में चचेरे भाइयों के बीच महाभारत जैसा युद्ध करवा दिया

वहीं दूसरी ओर मामा कंस ने अपने ही भांजे को मारने के लिए कई उपाय किए।

परंतु भगवान के सामने कोई शत्रु कभी टिका है?अनेक अत्याचार करने वाले अपने ही पापी कंस मामा को ,श्री कृष्ण को मारना पड़ा।

Notes…..

12 एक और महाभारत

महाभारत एक विशाल सभ्यता को नष्ट करने की कहानी है । इस घटना के अपयश को श्री कृष्ण जैसा व्यक्तित्व ही शिरोधार्य कर सकते थे।

कितनी बड़ी प्रतीत कथा है जिसमें श्री कृष्ण ने तय किया कि अब सुधार असंभव है ।जब राजभवन में ही स्त्रियों की यह स्थिति है तो बाकी समाज का क्या हाल होगा? राज दरबार में ही राजवधू का चीरहरण सारे कथित प्रबुद्ध लोगों के सामने हो सकता है तब ऐसे समाज में कोई सुरक्षित कैसे रहे। साथ ही ऐसे समाज को खड़े रहने का कोई अधिकार भी नहीं है। इसलिए उन्होंने संदेश दिया "है अर्जुन! उठा शस्त्र कर युद्ध! तू तो मात्र निमित्य होगा" । श्री कृष्ण महाभारत की युद्ध के नायक है, पर कितनी अनोखी बात है कि इस युद्ध में उन्होंने शस्त्र नहीं उठाएं ।इस अनूठे व्यक्तित्व को किसी भी ओर से पकड़ो कि यह अंक में समा जाए, पर हर बार कोशिश अधूरी ही रह जाती है ।

मछली अपने बच्चों को केवल देख कर बड़ा करती है कछुआ अपने बच्चों को केवल चिंतन द्वारा पालता है। कछुआ खुद तो पानी में रहता है और अपने अंडे स्थल में देता है जल में रहने के कारण निरंतर अपने अंडों का चिंतन करता रहता है। महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था । गांधारी अपने सौ अंडों को यानि पुत्रों को खो चुकी थी ।शोक से घिरी हुई गांधारी के सारे अंगों में क्रोध व्याप्त हो गया था। पुत्र शोक में डूबे जाने के कारण उसकी सारी इंद्रियां व्याकुल हो उठी। उस समय गांधारी ने सारा दोषी कृष्ण को ही माना उसने कहा 'श्री कृष्ण ! जनार्दन ! तुमने पांडव और धृतराष्ट्र के पुत्र आपस में लड़कर भस्म होते देखकर इनकी उपेक्षा कैसे कर दी? मधुसूदन तुम तो शक्तिशाली थे। तुम महा बलिशाली थे। दोनों पक्षों से अपनी बात मनवा लेने की सामर्थ्य तुम में मौजूद थीं। तुमने वेद-शास्त्रों और महात्माओं की बाते सुनी

और जानी थी ।यह सब होते हुए भी तुमने स्वेच्छा से गुरुकुल के नाश की उपेक्षा की ,सब जानकर भी इस वंश का विनाश होने दिया।यह तुम्हारा महान दोष है ,और तुम इसका फल प्राप्त करो। मैंने पति की सेवा से कुछ तप प्राप्त किया है उसी दुर्लभ तपोबल से मैं तुम्हें श्राप देती हूं ।तुमने आपस मे मार –काट मचाते हुए कुटुंबी कौरवों और पांडवो की उपेक्षा की है इसलिए तुम अपने भाई- बंधुओं का भी विनाश कर डालोगे। मधुसुधन!आज से छत्तिस वर्ष बाद तुम्हारे कुटुंबी ,मंत्री और पुत्र सभी आपस में लड़ कर मर जाएंगे । तुम भी अनाथ के समान जंगल में भटकोगे और किसी निंदित उपाय से मृत्यु को प्राप्त होओगे। इन भरत वंशी स्त्रियों के समान तुम्हारे कुल की स्त्रियां भी पुत्रों तथा भाई बंधुओं के मारे जाने पर इसी प्रकार सगे संबंधियों की लाशों पर गिरेगी। “यह घोर वचन सुनकर महामनस्वी वसुदेव नंदन श्रीकृष्ण ने मुस्कुराते हुए गांधारी से कहा,” क्षत्राणी! मैं जानता हूं आपने जो कहा वैसा ही होने वाला है और अपने कुल का संघार करने वाला मेरे सिवा दूसरा कोई नहीं है। यादव आपस में लड़कर ही नष्ट होंगे “

महाभारत युद्ध जिसमें लड़ - कट कर रक्त की नदियां बही, वह कौरव और पांडवों के बीच हुआ ।परंतु नारी का सम्मान करने वाले श्री कृष्ण ने नारी के इस श्राप का सम्मान कर यादव के बीच होने वाले एक और महाभारत का भी स्वीकार किया।

कई बार सत्य स्वयं में एक तरह का नहीं होता उसके भी दो पहलू हो जाते हैं । एक जो हमें दिखाई देता है और दूसरा जो हमें दिखाई नहीं देता। कहते हैं कि न्याय हमेशा उसकी खोज में होता है जो हमें नहीं दिख रहा होता है लेकिन यह कर पाना इतना आसान नहीं होता क्योंकि अगर आसान होता तो हम भगवान श्री राम का देवी सीता के प्रति प्रेम और उसकी आत्मीयता को समझ पाते और तब उनके त्यागने के प्रसंग पर उनकी विवशता हमारे सामने दर्पण की तरह साफ होती ।

हम सब ने श्रीराम पर दोष लगाया और प्रश्न किया कि उन्होंने सीताजी की अग्नि परीक्षा क्यों ली ?और हम सब जानते हैं कि होलीका जिसको ना जलने का वरदान था वह भी आग में जल गई और सीता जो इतनी कोमल इतनी नाजुक मिथिला की राजकुमारी अयोध्या की महारानी थी वह सुरक्षित वापस लौटी। अग्नि परीक्षा की इस पहेली का उत्तर भगवान राम ने हमें शब्दों में नहीं दिया लेकिन हमारे आधुनिक कवियों ने बहुत खूब दिया है,

जगकी सब पहेलियों का

देके कैसा हल गए

लोगों के जो प्रश्न थे वह

शोक में बदल गए

सिद्ध कुछ हुए ना दोश

दोष सारे टल गए

सीता आग में ना जली

राम जल में जल गए।

अयोध्या का हर व्यक्ति राम से खुश था ,तो यह निश्चित था कि अपने जीवन में राम ने बहुत से समझौते किए और राम संतोषी थे तो यह निश्चित था कि वे अपने लोगों की बहुत सी गलतियों को नजरअंदाज करते रहे, मनुष्यता के जो ऋण थे वह सब उतारते रहे और अपने मन को मारते रहे।

परंतु सीता की अग्नि परीक्षा को लेकर अनेक प्रश्न व उत्तरों का महाभारत आज भी जारी है।

Notes…..

13 है उत्तर?

भगवान राम के संघर्षों से हम सब परिचित हैं लेकिन क्या कभी उन्हें लेकर ,उनके संघर्षों को लेकर हमारे मन में प्रश्न आए हैं? नहीं ना! हमारे भारतीय कवि श्री द्विवेदी ने अपनी एक कविता के माध्यम से हम सब से प्रश्न पूछे हैं कि यदि भगवान राम जैसा संघर्ष हमारे जीवन में हो तो हम कहां तक टिक सकेंगे ?

"सह ली सारी यातना पर कर्तव्य सर्वोपरि रखा

त्याग शील संकल्प को जिस तरह जीवित रखा

बोलो कहां तक टिक सकोगे तुम यदि राम सा संघर्ष हो ,यदि राम सा संघर्ष हो

कल मुकुट जिस पर साजना था,अब उसे सब कुछ त्यागना था

निर्णयों के द्वंद्व से एक बालपन का सामना था

वचन भी था थामना ,आदेश भी था मानना

तब किस तरह सोचो स्वयं को धर्म मे तुम रख सकोगे

बोलो कहां तक टिक सकोगे?

प्रजा तो बस राम की थी, दुनिया उसे तो जप रही थी

वचन ही था तोड़ देता ,धर्म ही था छोड़ देता

पर पीढिया क्या सीख लेंगी ,राम को चिंता यही थी

हो छीन रहा एक क्षण में सब कुछ ,सोचो एक क्षण ...क्या करोगे?

जब सब कुछ हो बिखरा हुआ ,इतने सरल कब तक रह सकोगे

वह तो स्वयं भगवान था, पर कहां उसमें मान था

किरदार भी ऐसा चुना, जिसमें सिर्फ बलिदान था

मर्यादा के प्राण थे, रघुवंश के अभिमान थे

बोलो राम के अध्याय से ,एक पृष्ठ भी हासिल कर सकोगे?

कहां तक टिक सकोगे यदि राम सा संघर्ष हो, यदि राम सा संघर्ष हो"

है उत्तर??

इस देश में प्यार का अगर सबसे बड़ा नाम आता है तो वह राधा और कृष्ण का आता है।

हमारे भारतीय कवियों ने राधा और कृष्ण के प्रेम पर बहुत सारी अद्भुत रचनाएं की है। श्री सुरेंद्र शर्माजी की एक रचना में उन्होंने सोचा की स्वर्ग में राधा और कृष्ण आमने सामने मिल जाए, तो राधा तो प्रश्न करेगी की," ऐसी क्या बात थी वृंदावन में रास रचाया समुद्र के किनारे पहुंचकर द्वारकाधीश बन गए वापस भी नहीं लौटे" विचलित से कृष्ण और प्रसन्न चित सी राधा। कृष्ण इसीलिए विचलित थे कि प्रेम से अलग होकर गए थे और राधा प्रसन्न इसलिए थी क्योंकि प्रेम में डूबी हुई थी ।

राधा मुस्काई और कृष्ण सकपकाएं, इसके पहले की कृष्ण कुछ कहें ,राधा ने पूछा "कैसे हो द्वारकाधीश?" जो राधा उन्हें कान्हा कान्हा कह कर बुलाती थी उसके मुख से द्वारकाधीश का संबोधन कृष्ण को अंदर तक घायल कर गया। फिर भी अपने आप को संभाल लिया बोले राधा से " मैं तो तुम्हारे लिए आज भी कान्हा हूं ,तुम तो द्वारकाधीश मत कहो ,सच कहूं राधा! जब भी तुम्हारी याद आती थी इन आंखों से आंसुओं की बुंदे निकल आती थी। राधा बोली," मेरे साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ ना तुम्हारी याद आई ना कोई आंसू बहा क्योंकि हम तुम्हें भूले ही कहां थे जो याद आते और इन आंखों में सदा तुम रहते थे, कहीं आंसुओं के साथ निकलना जाओ इसीलिए रोते भी नहीं थे।

कृष्ण कुछ कड़वे शब्द सुन पाओ तो सुनाऊ? कान्हा से द्वारकाधीश बनने पर या प्रेम से अलग होने पर तुमने क्या खोया उसका एक आईना दिखाऊ? कृष्ण कभी तुमने सोचा इस तरक्की में तुम कितने पिछड़ गए, यमुना के मीठे पानी से जिंदगी शुरु की और समुद्र के खारे पानी तक पहुंच गए। एक उंगली पर चलने वाले सुदर्शन पर भरोसा कर लिया और दसो उंगली पर चलने वाली बांसुरी को भूल गए। जब तुम प्रेम से जुड़े थे, तो जो ऊंगली गोवर्धन उठाकर लोगों को विनाश से बचाती थी ,प्रेम से अलग होने पर वही ऊंगली क्या क्या रंग दिखाने लगी सुदर्शन चक्र उठाकर विनाश के काम आने लगी। कृष्ण! कान्हा और द्वारकाधीश में क्या फर्क होता है बताऊ? कान्हा होते तो तुम सुदामा के घर जाते सुदामा तुम्हारे घर कभी नहीं आते। कृष्ण तुम तो सभी कलाओं के स्वामी हो, गीता जैसे ग्रंथ के दाता हो ,धर्मशास्त्र के जानकार हो पर महाभारत युद्ध में क्या निर्णय लिया ,अपनी पूरी सेना कौरवों को सौंप दी और अपने आप को पांडवों के साथ कर लिया। सेना तो आपकी प्रजा थी राजा उसका पालक होता है ,आप जैसा महा ज्ञानी उस रथ को चला रहा था जिस पर बैठा अर्जुन आपकी ही प्रजा को मार रहा था। अपनी प्रजा को मरते हुए देख आपमें करूणा नहीं जगी ,क्योंकि आप प्रेम से शून्य हो गए थे ।प्रेम से जुड़े होते तो कौरवो और पांडवों में युद्ध नहीं बल्कि समझौते होते। कृष्ण! युद्ध और प्रेम में यही फर्क होता है युद्ध में आप मिटा करके जीतते हैं और प्रेम में आप मिटकर जीतते हैं ।

कृष्ण !आज भी धरती पर जाकर देखो अपनी द्वारकाधीश वाली छवि को ढूंढते रह जाओगे। हर घर में हर मंदिर में मेरे साथ ही खड़े नजर आओगे और जिस गीता में दूर-दूर तक मेरा जिक्र भी नहीं नाम भी नहीं है ,आज भी उस के समापन पर लोग राधे-राधे करते हैं।

है उत्तर?

Notes…..

14 जीवन संज्ञा

सच कहे तो राम ही कृष्ण है और कृष्ण ही राम है ।हम भारतीय लोगों के परम आदर्श राम भी है और कृष्ण भी हैं। भगवान राम का जीवन मर्यादाओं को कभी तोड़ना नहीं है, जबकि कृष्ण समय आने पर इसका अनुसरण नहीं करते ।राम अपने हर रूप में धर्म के लिए किसी ना किसी सुख की बलि देते हैं जाते हैं ।वही शास्त्र धारी राम युद्ध क्षेत्र में हर खोया सुख और पूर्ण सम्मान जितने में समर्थ है किंतु कृष्ण राजनीति का अवतार है। वह कभी जरासंध के भय से युद्ध छोड़कर भाग जाते हैं और रणछोड़ कहलाते हैं ,परिस्थिति खराब होने पर मैदान को छोड़ना मे बुरा नहीं मानते। समय और परिस्थिति के अनुसार कार्य करते हैं। राम और कृष्ण की युद्ध नीति में बहुत अंतर है। राम ने अपने सम्मान की लड़ाई लड़ी। कृष्ण ने लड़ाई अपने लिए नहीं बल्कि धर्म की रक्षा करने के लिए थी। राम को रावण के छल और उसकी मायावी शक्तियों का सामना करना पड़ा ।लेकिन कृष्ण को छल करने वाले लोगों के साथ छल का ही सहारा लेना पड़ा।कृष्ण का जीवन हमें शिक्षा देता है कि धर्म रक्षार्थ कई बार धर्म विरुद्ध भी आचरण करना होता है ।दरसल राम अपने जीवन दर्शन और व्यवहार में लौकिक मर्यादा का उल्लंघन नहीं करते जबकि भगवान कृष्ण जीवन दर्शन और व्यवहार के बहुआयामी पक्ष है। राम की जीवन शैली आपको जीवन में बाधाओं से उबरने का मार्ग प्रशस्त करती है और कृष्ण के जीवन से सुखी जीवन की प्रेरणा मिलती है। राम और कृष्ण दोनों ही भगवान विष्णु के रुकते जो अलग-अलग रूपों में जान लेकर आएं और सारी मानव जाति की रक्षा थी और दोनों ही अवतार में मानव को शिक्षा प्रदान की। दोनों का ही उद्देश्य एक ही है '**निष्काम स्वधर्मकर्म**'।